

# PRESS & MEDIA



**CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE,  
ROORKEE, UTTARAKHAND**



# CSIR-CBRI in the Limelight | 20.12.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय



## राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन कु शुभारंभ: पाली जिले का सवाईपुरा बना प्रथम गाँव

प्राविष्टि तिथि: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहले प्रधानमंत्री के 'विकासित भारत- 2047' के विज़न के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का अपवारिक शुभारंभ साक्षर, पाली श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एवं कलेसेर्टी, महानिदेशक सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र, प्रौद्योगिकी एवं संतान अनुसंधान संस्थान, डॉ. पी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि, गेर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के देशनिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत अवश्यकता आकलन संरक्षण किया गया, जिसके अंतर्गत प्रधानमंत्री द्वारा सवाईपुरा गाँव में विस्तृत अवश्यकता आकलन संरक्षण किया गया, जिसके अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधीसंस्थान (कूल रूप तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं पीकेल स्टोर और सुरक्षित पेपजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (औषधीय एवं सुगंधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संरक्षण, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैव अपघटन उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोर्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वर्यजीव-मानव संरचना-न्यूट्रीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुष्य गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी सम्बन्धित तकनीकी नवाचारी का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, अजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता की बढ़ावा देना तथा सवाईपुरा गाँव को एक अदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राशीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी अरआई, रुद्धकी, सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियात्वन धारीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सवाईपुरा गाँव के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया गया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्द्र चतुर्पाल मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीरी अरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताजिश आलम, डॉ. नवीन श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।







(रिलीज़ आईडी: 2207118) आगंतुक पटल : 65  
इस विज्ञापि को इन भाषाओं में पढ़ें: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33>

## राजस्थान से सीएसआईआर 'स्मार्ट गाँव' मिशन का शुभारंभ: पाली जिले का सर्वाईपुरा बना प्रथम गाँव

उजाला भारत न्यूज

**रुड़की/पाली।** भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सर्वाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकासित भारत- 2047' के विज्ञन के अनुरूप ग्रामीण भारत समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ संसद, पाली, पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कौलेसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरला, निदेशक, सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ

अधिकारी, ग्राम प्रतिनिधि और सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सर्वाईपुरा गाँव में विस्तृत अवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके आधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकों प्रदर्शनी में जलवायु-संबंधी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंचयन (कल रुफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फौकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कौषि एवं संबद्ध क्षेत्र (आौषधीय एवं सुगाधित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ऊस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपचय उत्पाद, बायोगैस एवं कैम्पोस्टिंग,



डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूनीकरण, स्वाम्भूति निगरानी, उद्धुगुणवत्त विश्लेषण)।

भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समन्वित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता के बढ़ावा देना तथा सर्वाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप है। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई

दिल्ली के साथ एक समझौता जापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।

कार्यक्रम के अंत में सर्वाईपुरा गाँव के विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ सवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया।

सो ए स अ ११ अ १२ - सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. लालेश आलम, डॉ. नवीन चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

प्रौद्योगिकी विभाग के अधिकारी डॉ. विजय शर्मा अवधार के रूप में उपस्थित रहे।



## CSIR SMART Village Initiative Launched from Sawaipura

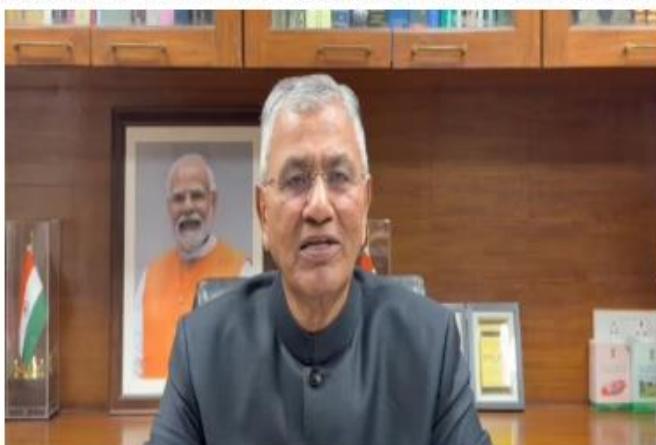
मार्गदर्शिता: 20 DEC 2025 8:01PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047".

This mission mode project inaugurated by Member of Parliament, Pali, Shri. P. P. Chaudhary, and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, DG-CSIR, New Delhi, Shri Bhim Raj Bhati, MLA, Pali constituency along with Professor, Pradeep Kumar Ramanchandra, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Dr. P C Panchariya, Director CSIR-CEERI, Pillani, Sh. Vishal Sipa, ACEO, Pali, Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat, Sh. Sunil Bhandari, District President, Sh. Prakesh Patel, Tahsildhar, Rohat, Shri Dilip Singh VDO, and Sh. Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, along with scientists from different CSIR laboratories, who were present at the event.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories were present and conducted a detailed need assessment survey, leading to the identification of suitable technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan. During the launch event, the exhibition gallery showcased a range of climate-responsive and livelihood-oriented invention, including solutions for housing and infrastructure (cool roof technologies, low-cost housing, and rural roads), renewable energy and water management (solar assisted systems, wastewater and fecal sludge treatment, and safe drinking water solutions), agriculture and allied sectors (aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition, and smart farm machinery), waste management (solid waste management, biodegradable products, biogas, and composting), digital and AI-enabled systems (smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, and milk quality analysis), as well as groundwater assessment.

Together, these integrated inventions aim to improve quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and schemes. Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On this occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will serve as the implementation partner for the project. The villagers of Sawaipura interacted with scientists from different CSIR laboratories. The event was coordinated by, Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were present at the event.





<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2207118&reg=39&lang=33>

# राजस्थान से सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन का शुभारंभ

## पाली जिले का रावाईपुरा बना प्रथम गाँव

महालहर न्यूज़

कुड़की / चाली। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा अैश्विक अनुसंधान परिषद् द्वारा संचालित स्मार्ट गाँव मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के समाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहला प्रायोगिकी के विकासित भारत-2047 के विज्ञन के अनुकूल प्रायोगिकी भारत के समारंपन संसद, नवीकरणीय कृषि एवं जल प्रबंधन की प्रदर्शन का उद्देश्य द्वारा संचालित स्मार्ट गाँव मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के समाईपुरा गाँव में किया गया। यह पहला प्रायोगिकी के विकासित भारत-2047 में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ संसद, गणती, श्री ए. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसल्लै, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, हीएसआईआर, न्यू दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमसराज शाही, विधायक, पाली विधानसभा द्वेष, श्री प्रदीप कुमार रमनचराला, निदेशक, सीएसआईआरडोक्ट्रिय मन्त्र अनुसंधान संस्थान, डॉ. पी. सी. चौधरी, निदेशक, सीएसआईआरडोक्ट्रिय सहित जिला

प्रशासन के वीष्ट अधिकारी, ग्राम प्रगति निधि, गैर-मरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपर्युक्त गाँव के वैज्ञानिक उपर्युक्त गाँव के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा समाईपुरा गाँव में विस्तृत अवधेक्ता आवश्यकता सर्वेषण किया गया, जिसके अंतर्गत यह स्मार्ट गाँव मिशन के अंतर्गत उपलक्ष तकनीकों की प्रधानता गई। इस अवसर पर आवोजित तकनीकों प्रदर्शन में जलवाय-संरक्षण एवं आवासीय-आवासीय समाचारों का उद्दर्शन किया गया, जिसमें आवास एवं अपांसंचना (कुल रूप तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण मुद्रक), नवीकरणीय कृषि एवं जल प्रबंधन (सीर कूर्ज प्रणाली, आपाइट जल एवं फैकलत जल उपचार, सुखित पर्याल समाचार), कृषि एवं संरक्षक क्षेत्र (औपचार्य एवं सुखित फसलें, मध्यमवस्थी पालन, मिलें मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि खेत्र), ग्राम आपाइट प्रबंधन, जैवअन्तर्दृश्य उत्पाद, सायेंग्स एवं ब्रॉमोसिटंग, डिजिटल एवं एश्व-सम्बन्ध प्रणालियाँ (स्मार्ट कूर्ज प्रणाल, बन्दगीवस्थानव संरक्षण यूनिकरण, स्वास्थ्य निपासनी दुष्य गुणवत्ता विक्रेता) तथा भूजल आवश्यकता से संबंधित तकनीक शामिल रही। इन सभी

समानिक तकनीक नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुरक्षा काग्य, पर्यावरणीय स्थिति को बढ़ावा देना तथा सबाईंपुरा गाँव को एक आदान-स्मृट गाँव के रूप में विवरित करना है, जो ग्रामीण मिशनों द्वारा योजनाओं के अनुद्वय हो। डॉ. किशोर एम. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआरडोक्ट्रिय आवास, रुद्रकृष्ण, सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के गोलह समन्वयक के रूप में कार्यदत है। कार्यक्रम के दौरान यात्रा रथा भारत, न्यू दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञान (ट्रेव) एवं हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्षियावन भागीदारों के रूप में कार्य करेगा। कार्यक्रम के अंत में सबाईंपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रसारावित तकनीकी समाचारों पर आने विचार साझा किए। इस आवोजन का समन्वय डॉ. चंद्रन स्वराम मीम, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआरडोक्ट्रिय आवास डॉ. अजय चौरसीया, डॉ. तापिक्ष आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रवर्ती साहित अद्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।



शिक्षा मंत्रालय



## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की ने राजस्थान के स्वाइपुरा से 'स्मार्ट विलेज' पहल का शुभारंभ किया

- प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत @2047' के विज्ञन के अनुरूप मिशन-मोड परियोजना
- जलवायु-सहनशील, आजीविका-केंद्रित एवं डिजिटल प्रौद्योगिकियों का एकीकृत कार्यान्वयन
- 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा आवश्यकता-आधारित प्रौद्योगिकी आंकलन

प्रार्क्षित तिथि: 20 DEC 2025 10:16PM by PIB Dehradun

भारत सरकार के विज्ञन एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित 'स्मार्ट गाँव' मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के स्वाइपुरा गाँव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत- 2047' के विज्ञन के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्ची, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डॉ.एसआईआर. नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री भीमराज भाटी, विधायक, पाली विधानसभा क्षेत्र; प्रो. प्रदीप कुमार रमनवरला, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान; डॉ. पी. सी. पंचरिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, ठाकुर श्री महान पराक्रम सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत - चौटिला, ग्राम प्रतिनिधि-गण, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि तथा विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।



कार्यक्रम के दौरान 14 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों द्वारा सर्वाईपुरा गाँव में विस्तृत आवश्यकता आकलन सर्वेक्षण किया गया, जिसके अधार पर 'स्मार्ट गाँव' मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संविदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधेसरवना (कुल रूफ तकनीक, कम तागत आवास, ग्रामीण सड़कें), नवीकरणीय ऊर्जा एवं जल प्रबंधन (सौर ऊर्जा प्रणाली, अपशिष्ट जल एवं फैकल स्लज उपचार, सुरक्षित पेयजल समाधान), कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र (आषाढ़ीय एवं सुधारित फसलें, मधुमक्खी पालन, मिलेट मूल्य संवर्धन, स्मार्ट कृषि यंत्र), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जैवअपयोग उत्पाद, बायोगैस एवं कम्पोस्टिंग, डिजिटल एवं एआई-सक्षम प्रणालियाँ (स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन, वन्यजीव-मानव संघर्ष न्यूट्रीकरण, स्वास्थ्य निगरानी, दुर्घट गुणवत्ता विश्लेषण) तथा भूजल आकलन से संबंधित तकनीकें शामिल रहीं। इन सभी समर्पित तकनीकी नवाचारों का उद्देश्य ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार, आजीविका सुदृढ़ीकरण, पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा सर्वाईपुरा गाँव को एक आदर्श स्मार्ट गाँव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की, सीएसआईआर स्मार्ट गाँव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम के दौरान बाल रक्षा भारत, नई दिल्ली के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो इस परियोजना के क्रियान्वयन भागीदार के रूप में कार्य करेगा।



कार्यक्रम के अंत में सर्वाईपुरा गाँव के ग्रामीणों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों के साथ संवाद किया और प्रस्तावित तकनीकी समाधानों पर अपने विचार साझा किए। इस आयोजन का समन्वय डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, श्री राजेश कुमार शर्मा तथा उनकी टीम द्वारा किया गया। सीएसआईआर-सीबीआरआई से डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. ताविश आलम, डॉ. नवीन, श्री चक्रधर सहित अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं परियोजना सहायक भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

12/23/25, 12:01 PM

Press Release-Press Information Bureau



(रिलीज आईडी: 2207121) आगंतुक पटल : 36  
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

<https://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2207121&reg=46&lang=45>



## सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सर्वाईपुरा में हुआ शुभारंभ

मरु लहर न्यूज

**पाली।** भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय अंतर्राष्ट्रीय तौर पर औद्योगिक एवं उत्तरसंचार (सीईएसआर) ने प्रधानमंत्री के विकासित भारत / 2047 के विषय के अनुसार सीईएसआर अमृत टिले नामक प्रयोगशाला का शाखारंभ 20 दिसंबर को किया गया। इस पहल के अंतराल भारत के विभिन्न जलवायी क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का जलवायी कार्य किया गया है।

इनमें राजस्थान के पाली जिले के सर्वाईपुरा गांव को गर्म व शुष्क जौन में शामिल किया गया है। यह परियोजना स्वदेशी सीएसआई और प्रैथमिकियों के

माध्यम से प्रभुग्राम विकास संकरकों में सुधार करते हुए सम्पूर्ण विकास पर काँटा है, जो लूट लैने के मार्गदर्शक सिद्धांत का अनुभव करते हैं। इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएस आईआर-कैरियर भवन अनुसन्धान संस्थान (सीएसआईआर) की द्वारा किया जा रहा है, जिससे सीएसआईआर को तेरह सहभागी प्रयोगशालाएँ समर्पित हैं। इनमें सीएस आईआर-एचबीटी, सीएस आआर-आर-सीपी, सीएस आईआर-नोटी, सीएस आईआर-सी आआरआई, एप्पलीसीआईआर, एसईएसआरसी, सीएस आईआर-आर, सीएस आईआर-एप्पलीसीआईआर, सीएस आईआर-एसईएसआरसी, सीएस आईआर-आर, सीएस आईआर-

आईआईसीसीटी, सीएसआईआरआई, सीएसआईएससीटी, एसीआईआरआई, सीएसआईआरआई, तथा सीएसआईआरआई, सोसाइटीआईआरआई, जैसा कि विज्ञान विद्या विद्यालय है। परियोजना का प्रारंभिक चरण में संस्कृत संस्कारक तथा वाक रस भाषा (संस्कृत र चिकित्सा) द्वारा कार्यालयवाले पर्सनेल के रूप में सहयोगी प्रदान किया जा रहा है। महाराष्ट्र प्रशासनात्मक विभाग ने एक विकास, आधारभूत संस्कृता, ग्रन्थ संकोष, कृषि एवं संस्कृतका प्रारोगिकियों, जीव-आधारवादी जीवविज्ञान, वनविज्ञानका विभिन्नकरणीय ऊर्जा, इको-किन्चन, भूजल एवं अर्थशाश्वत जल प्रबंधन,

आपदा जॉखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कलेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवानीं के शक्ति वै मिशन को एक परिस्थिति को रहायी है इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक नाम भारतीय 20 दिवसीय कोष का पालन संस्कारण थी। पूरी चौथी तथा बांस बेनेशन, इन्वेस्टमेंट पर संयुक्त संसदीय समिति (जॉर्मेसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कलैंसल्वी, सचिवी विवाहिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डॉ.सरस्वातीआर) तथा मानविदेशक, सीएसआईआर, नई डिस्ट्रिक्ट द्वारा बच्चों का माध्यम से किया गया। इस अवसर पर प्रदीप कुमार रामगण्ठारता, निदेशक, सीएसआईआर-

सीधी ओरआई, रुद्धकी सहित जिला प्रशासन के बरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि सुनिल खण्डारी, प्रधानमंत्री विधायक भीमराज भट्टी, विधायिक समिति अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज, सी. रो. वर्म कार्यकारी अधिकारी, यामीन विकास, हरि सिंह राजपुरोहित कार्यकारी अधिकारी पंचायती राज, परुण कुमार शांति उत्तराखण्ड अधिकारी, मनमोहन खाने विकास अधिकारी गोदावरी तथा दिलीप सिंह विकास अधिकारी, चोटिला ग्राम समिति अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान व्यक्ति उपस्थित हैं। इस कार्यक्रम का समनव्यवधान (सोसाइटीज आयर) के प्रधान वैज्ञानिक डॉ किरोर ने किया।

## CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative from Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of 'Viksit Bharat @ 2047'
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

Posted On: 20 DEC 2025 10:13PM by PIB Dehradun

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on 'SMART VILLAGE' from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of 'Viksit Bharat @ 2047'.



The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramancharia, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Pancharya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, CEO, Pali; Shri Mannohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Thakur Shri Mahan Parakram Singh, Shri Dilip Singh, VDO; and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, beekeeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products; biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.



These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI: Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present.



The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

<https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=2207120&reg=46&lang=1>

सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल के तहत राजस्थान पाली के सवाईपुरा में हुआ शुभारंभ



मरु मंच

महानिवेदन, सोसायटीज़ आर्ट्स, नवं  
दिक्षा द्वारा विद्यालय द्वारा दिया जाता  
किया गया। इस अवसर पर प्रा.  
प्रदीप चौधरी, राजनीतिक  
निदेशक, सोसायटीज़ आर्ट्स  
संस्कारात्मक, विश्वविद्यालय  
प्रशासन के वर्षीय अधिकारी,  
जनप्रतिनिधि सोसायटी प्रबंधन,  
प्राचीन विद्यालय भारत, विश्वास  
नियम अधिकारी युवा कार्यकारी  
प्रभागी, चंचला गढ़, सो. पी.  
वर्मी कार्यकारी अधिकारी, प्राचीन  
विद्यालय, रिं चंचला वर्गार्थ  
कार्यकारी अधिकारी चंचला गढ़,  
पुणे चौधरी राजनीति उपसंचार  
अधिकारी, महाराष्ट्र नियम बंद  
विकास अधिकारी रोड तथा  
दिल्लीप सिंह ग्राम विकास  
अधिकारी, चंचिता राजनीति संस्था  
अनेक विद्यालय इस एक कार्यक्रम  
की उपर्युक्त रूप से इस कार्यक्रम  
का सम्बन्ध (सोसायटीज़ आर्ट्स) के  
प्राचीन विद्यालय विभाग से जोड़ा

अब डोर-डू-डोर होगा सर्वे  
25 तक नाम नहीं हटाने पर होगी कार्यवाही  
गणी वसली

योजना के मानकों के अनुसार परी जिसके परिणाम स्थापित जिसे

Search Q



सर्कल न्यूज

(TM)

ABOUT US ≡

Homepage देश गुजरात राजस्थान तमिलनाडु

Home , राजस्थान , पाली , 'विकसित भारत' की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले 'CSIR स्मार्ट गाँव' मिशन का ऐतिहासिक आगाज

## 'विकसित भारत' की प्रयोगशाला बनेगा पाली का सवाईपुरा: देश के पहले 'CSIR स्मार्ट गाँव' मिशन का ऐतिहासिक आगाज

देश राजस्थान पाली

PUBLISHED ON DECEMBER 20, 2025

BY राव गुमान सिंह

f x g t w



सर्कल न्यूज

आपका साथ, हमारा विश्वास 8094-161616





### 14 वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं की तकनीक से बदलेगी गांव की तस्वीर; खेती, पानी और मकान सब होगा हाइटेक

सर्कल न्यूज नेटवर्क पाली/सवाईमुरादाबाद के पाली जिले का एक छोटा सा गांव 'सवाईमुरादाबाद' अब देश के नक्शे पर विज्ञान और तकनीक के मॉडल के रूप में उभरेगा। प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत-2047' के सपने को साकार करने की दिशा में शनिवार को यहाँ एक नया इतिहास लिखा गया। विज्ञान एवं पौद्योगिकी मंत्रालय के तहत सीएसआईआर (CSIR) ने अपने महत्वाकांक्षी "स्मार्ट गाँव" (Smart Village) मिशन मोड प्रोजेक्ट का शुभारंभ इसी गाँव से किया है।

इस मिशन का औपचारिक उद्घाटन पाली सांसद पी.पी. चौधरी और सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी ने किया। इस दौरान पाली विधायक भीमराज भाटी, सीएसआईआर-सीबीआरआई निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार रमनचरता और सीएसआईआर-सीरी निदेशक डॉ. पी.पी. पंचारिया भी मौजूद रहे।



क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईमुरादाबाद गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाइटेक बदलाव किए जाएंगे:

- आवास और बुनियादी ढाँचा: कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- खेती-किसानी: औषधीय और सुरक्षित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- पानी और ऊर्जा: सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का



क्या है 'स्मार्ट गाँव' मिशन? यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत को विज्ञान से जोड़ने की एक क्रांति है। इस मिशन के तहत सीएसआईआर की 14 प्रमुख प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों ने सवाईपुरा गाँव का गहन सर्वेक्षण किया और यहाँ की जरूरतों के हिसाब से 'कस्टमाइज्ड' तकनीकी समाधान तैयार किए हैं। इस प्रोजेक्ट के तहत गाँव में निम्नलिखित हाइटिक बदलाव किए जाएंगे:

- आवास और बुनियादी ढाँचा: कूल रूफ तकनीक (गर्मी से बचाने वाली छतें), कम लागत वाले मजबूत मकान और आधुनिक ग्रामीण सड़कें।
- खेती-किसानी: औषधीय और सुरक्षित फसलों की खेती, मधुमक्खी पालन, स्मार्ट कृषि यंत्र और मिलेट (मोटा अनाज) की प्रोसेसिंग।
- पानी और ऊर्जा: सौर ऊर्जा प्रणाली, गंदे पानी का ट्रीटमेंट (Recycling), पीने का साफ पानी और भूजल का वैज्ञानिक आकलन।
- डिजिटल और एआई: वन्यजीव-मानव संघर्ष रोकने के लिए एआई सिस्टम, स्मार्ट बिजली प्रबंधन, डिजिटल हेल्प मॉनिटरिंग और दूध की गुणवत्ता जांचने वाली मशीनें।



तकनीकी प्रदर्शनी ने मोहा मन कार्यक्रम स्थल पर एक विशेष तकनीकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें वैज्ञानिकों ने दिखाया कि कैसे ब्रायो-गैस, कम्पोस्टिंग और ठोस कचरा प्रबंधन से गाँव को 'जीरो वेस्ट' बनाया जा सकता है। मिशन के नोडल समन्वयक डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी ने बताया कि इन तकनीकों का मकसद ग्रामीणों की आय बढ़ाना और जीवन स्तर सुधारना है।

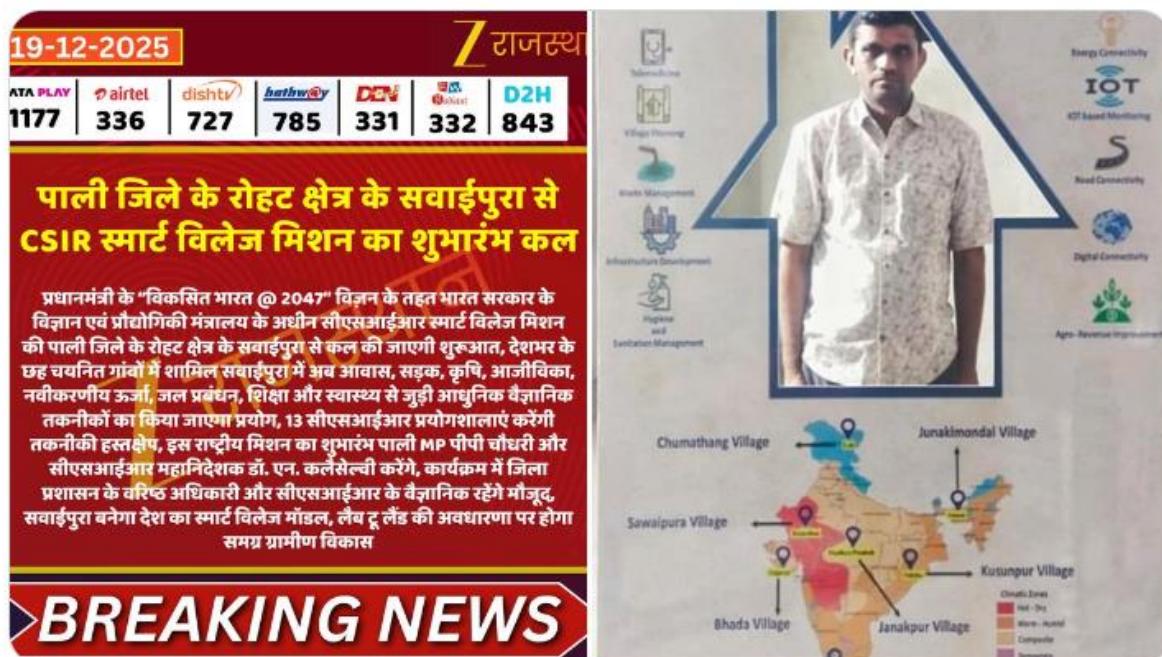
← Post

ZEE Rajasthan   
@zeerajasthan\_

...

#Pali : पाली जिले के रोहट क्षेत्र के सवाईपुरा से CSIR स्मार्ट विलेज मिशन का शुभारंभ कल

@DcDmPali @Palisandeep\_ @BalaramHarawas #LatestNews  
#RajasthanNews #RajasthanWithZee



11:30 PM · Dec 19, 2025 · 799 Views

<https://share.google/Q5Tbf6v2TLgYFmg9U>

## स्मार्ट विलेज़ : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

मार्कर संवाददाता | पाली

भारत सरकार ने स्मार्ट विलेज़ मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत विलेज़ में रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मार्ट विलेज़ के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। राजस्थान से यह इकलौता गांव है।

प्रधानमंत्री ने दो गांवों के विकास भारत 2047 के विजन को सकारात्मक प्रबंधन (हाइजॉन एंड सेनेटेशन) करने की दिशा में वैश्विक एवं परिशेष व्यापार जगत् में विकास और अनुरोध अनुरोध परिवर्द्धन को जनसंख्या 1100 है। (सीएसआईआर) विजन एवं कुल वाटर 650 है। नया नाम 50 प्रोजेक्टों के मंत्रालय ने प्रोजेक्ट को चुना है और 18 से कम के 400 शुरूआत की है। इसमें मध्य प्रदेश से लागू शामिल हैं। स्मार्ट विलेज़ के कामों की मन्त्रितरी कलेक्टर करती। चुम्बकीय (लेह), असम का अंतरिक्ष अधिकारी अधिकारी चुम्बकीयांडल (जोहरहट), ओडिशा का कुमुसुर (केदरनाथ) और गुरुतर का भाषा (कच्छ) शामिल हैं। इनका उद्देश्य आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उपयोग का जाएगा।

और डिजिटल साक्षों के उपयोग से ग्रामीण भारत का समग्र विकास करना है। बता दें कि सवाईपुरा में वेस्ट मैनेजमेंट, कृषि एवं वायर सुपर (एप्प रेन्वर्स इंवेस्टमेंट), डिजिटल कनेक्टिविटी, सङ्केती व्यवस्था, टेली मैटेसिन, ईमर्सन, डेस्ट्रॉक्टर डेलपर्टमेंट, विलेज प्लानिंग, और स्वच्छता

### स्मार्ट विलेज़ में प्रमुख रूप से ये मुख्य काम होंगे



- आवास और निर्माण (CSRI-CBRI): भवन डिजाइन, कम लागत वाले आवास, कुल रूफ तकनीक, मिट्टी के ब्लॉक आदि।
- सड़क (सीएसआईआर-सीआईआरआई): वार्म मिक्स, कोल्ड मिक्स और लेट लाइसिंग से।
- इंट्रीटर (सीएसआईआर-सीईआईआई): इं-ट्रूटर, स्वचालित खेती उपकरण, स्मार्ट खेती मरीन, और सोलर प्रैन हॉवर्स।
- ऊजा और पर्यावरण (सीएसआईआरई, सीईआईआई): सोलर बैश्यामास हाईबिड मॉडलिंग, डीसी मॉडलोंग और एप्पलीकेशन।
- जल प्रबंधन (जॉड्यूआईटीटी, सीजीआईआई): भूजल अवलोन और जल वाटर एप्प्लीकेशन।
- स्वच्छता (सीएसआईआर-सीईआईआई): टेली-हेथ कनेक्ट और जल शोधन प्रणाली (डी-टेल्स नीर)।

### सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में यथा अलग है ?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना था। इसमें सामाजिक, आर्थिक, बृनियादी ढांचे, शासन, मानव विकास आदि। ये समूचीकृत भागीदारी और जननीतिशील नेतृत्व पर आधारित है। जबकि स्मार्ट विलेज़ परियोजना में गांवों को सांसद क्षेत्र, डिजिटल सुविधाएं, नवाचार, आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर से जोड़ता है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्मार्ट सड़कें, सोलर लाइटिंग, डिजिटल सेवाएं, स्मार्ट स्वास्थ्य क्लिंज के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श ग्राम योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलाता है। लेकिन स्मार्ट विलेज़ परियोजना में अलग-अलग प्रैसियों द्वारा तकनीकी संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सीएसआर के प्रैनों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

## CBRI रुड़की ने राजस्थान के सवाईपुरा से 'स्मार्ट विलेज़' पहल का शुभारंभ किया

पीआईबी

देहरादून 20 दिसंबर | भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) द्वारा संचालित "स्मार्ट गांव" मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ आज राजस्थान के पाली जिले के सवाईपुरा गांव में किया गया। यह पहल प्रधानमंत्री के "विकसित भारत-2047" के विजन के अनुरूप ग्रामीण भारत के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मिशन का औपचारिक शुभारंभ सांसद, पाली, श्री पी. पी. चौधरी, तथा डॉ. (श्रीमती) एन कल्पेन्टी मद्दनिटेशन की सीएसआरआर



पर "स्मार्ट गांव" मिशन के अंतर्गत उपयुक्त तकनीकों की पहचान की गई। इस अवसर पर आयोजित तकनीकी प्रदर्शनी में जलवायु-संवेदी एवं आजीविका-आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया गया, जिनमें आवास एवं अधोसंरचना (कूल रूफ तकनीक, कम लागत आवास, ग्रामीण

सवाईपुरा गांव को एक आदर्श स्मार्ट गांव के रूप में विकसित करना है, जो राष्ट्रीय मिशनों एवं योजनाओं के अनुरूप हो। डॉ. किशोर एस. कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की; सीएसआईआर स्मार्ट गांव मिशन के नोडल समन्वयक के रूप में कार्यरत हैं। कार्यक्रम

## CSIR-CBRI Roorkee Launches SMART Village Initiative From Sawaipura, Pali District, Rajasthan

- Mission Mode Project aligned with Prime Minister's vision of **Viksit Bharat @ 2047**
- Integrated deployment of climate-resilient, livelihood-oriented and digital technologies
- Scientists from 14 CSIR laboratories conduct need-based technology assessment

**Dehradun (The Hawk):** The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE" from Sawaipura Village, Pali District, Rajasthan, aligned with the Hon'ble Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047."

The initiative was inaugurated by Shri P. P. Chaudhary, Hon'ble Member of Parliament, Pali, along with Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Director General, CSIR & Secretary, DSIR, Government of India. The launch ceremony was attended by Shri Bhim Raj Bhati, Hon'ble MLA, Pali Constituency; Prof. Pradeep Kumar Ramancharla, Director, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CEERI), Pilani; Shri Vishal Sipa, ACEO, Pali; Shri Manmohan Meena, BDO, Rohat; Shri Sunil Bhandari, District President; Shri Prakesh Patel, Tehsildar, Rohat; Shri Dilip Singh, VDO; and Shri Santanu Chakraborty, CEO, Bal Raksha Bharat, New Delhi, along with scientists from multiple CSIR laboratories.

On this occasion, scientists from 14 CSIR laboratories carried out a comprehensive need assessment survey, leading to the identification of location-specific technologies for



deployment under the CSIR SMART Village Mission in Sawaipura. An exhibition gallery showcased a wide range of climate-responsive and livelihood-oriented innovations, including solutions for housing and infrastructure such as cool roof technologies, low-cost housing systems and rural roads; renewable energy and water management solutions including solar-assisted systems, wastewater and faecal sludge treatment, and safe drinking water technologies; agriculture and allied sectors covering aromatic and medicinal crops, bee-keeping, millet value addition and smart farm machinery; waste management solutions such as solid waste management, biodegradable products, biogas and composting; and digital and AI-enabled systems for smart energy management, wildlife conflict mitigation, health monitoring, milk quality analysis, along with groundwater assessment tools.

These integrated interventions aim to enhance quality of life, strengthen rural livelihoods, promote sustainability, and support the holistic development of Sawaipura as a model SMART Village aligned with national missions and government schemes.

Dr. Kishor S. Kulkarni, Principal Scientist, CSIR-CBRI, Roorkee, is serving as the Nodal Coordinator for the CSIR SMART Village Mission. On the occasion, an MoU was signed with Bal Raksha Bharat, New Delhi, which will act as the implementation partner for the project. Villagers of

Sawaipura actively interacted with scientists from various CSIR laboratories, sharing local challenges and aspirations. The event was coordinated by Dr. Chandan Swaroop Meena, Shri Rajesh Sharma, and their team. From CSIR-CBRI, Dr. Ajay Chourasia, Dr. Tabish Alam, Dr. Naveen, Shri Chakradhar, and other officials were also present. The CSIR SMART Village Initiative reflects CSIR's commitment to science-led rural transformation, leveraging indigenous technologies to create self-reliant, sustainable and resilient villages across India.

## Rs 6 Crore Loan Scam At Nainital Bank Almora, FIR Against Ex-Manager

Swati

**Almora (The Hawk):** Rs 6 Crore Loan Scam at Nainital Bank, FIR Registered A major loan fraud has been uncovered at the Nainital Bank branch in Almora, where the then branch manager allegedly manipulated 37 loan accounts, causing a loss of

IIT Roorkee

# **CSIR-CBRI in the Limelight | 19.12.2025**

Ministry of Science & Technology



## **CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission**

- Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions
- Building achieves significant water, energy and cost savings using indigenous technologies

Posted On: 19 DEC 2025 3:28PM by PIB Dehradun

In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.



The innovative facility was inaugurated virtually by Dr. N. Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the august presence of Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasized that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof. R. Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisioning over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.



Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.



With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.

 **PIB in Uttarakhand**  
@PIBDehradun - [Follow](#)

👉 CSIR-CBRI Unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani, Advancing India's Low-Carbon Construction Mission

👉 Prototype demonstrates low-carbon, climate-responsive construction for hot-dry regions

3:33 PM - Dec 19, 2025

 1   Copy link

[Read 1 reply](#)



## सीएसआईआर स्मार्ट विलेज पहल का शुभारंभ सवाईपुरा में कल 20 दिसम्बर को

प्राविष्टि तिथि: 19 DEC 2025 5:50PM by PIB Jaipur

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने प्रधानमंत्री के 'विकासित भारत @ 2047' के विज्ञान के अनुरूप "सीएसआईआर स्मार्ट विलेज" नामक मिशन मोड परियोजना का शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को किया जा रहा है। इस पहल के अंतर्गत भारत के विभिन्न जलवायी क्षेत्रों में स्थित छह ग्रामों का चयन किया गया है। इनमें सवाईपुरा (पाली जिला, राजस्थान), जनकपुर (रायसेन जिला, मध्य प्रदेश), जुनाकीमंडल (जोरहाट जिला, असम), कुसुनपुर (केंद्रपाड़ा जिला, अंडिशा), चुम्पांग (लोह जिला, लद्दाख) तथा भाड़ा (कर्जु जिला, गुजरात) शामिल हैं। यह परियोजना स्वादेशी सीएसआईआर-प्रौद्योगिकीयों के माध्यम से प्रमुख ग्राम विकास संकेतकों में सुधार करते हुए समग्र ग्राम विकास पर केंद्रित है, जो "लैब टू लैंड" के मार्गदर्शक सिद्धान्त का अनुसरण करती है।

इस मिशन का नेतृत्व नोडल प्रयोगशाला, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीवीआईआई), रुड़की द्वारा किया जा रहा है, जिसमें सीएसआईआर की तेरह सहभागी प्रयोगशालाएँ सम्मिलित हैं। इनमें सीएसआईआर-आईएचबीटी, सीएसआईआर-सीमैप, सीएसआईआर-नीरी, सीएसआईआर-सीआरआई, सीएसआईआर-एसईआरसी, सीएसआईआर-सीएसआईओ, सीएसआईआर-आईआईसीटी, सीएसआईआर-सीएनआरआई, सीएसआईआर-एनआईआरसीटी, सीएसआईआर-एनआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-सीईम्हआरआरआई तथा सीएसआईआर-सीईआईआरआई शामिल हैं।

परियोजना के प्रारंभिक चरण में राजस्थान सरकार तथा बाल रक्षा भारत (सेव द चिल्डन) द्वारा कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में सहयोग प्रदान किया जाएगा।

सहभागी प्रयोगशालाएँ आवास नियोजन एवं विकास, आधारभूत संरचना, ग्राम सड़कों, कृषि एवं सहायक प्रौद्योगिकीयों, कृषि-आधारित आजीविका, नवीकरणीय ऊर्जा, इको-निकान, भूजल एवं अपासिष्ट जल प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, पर्यावरण संरक्षण, डिजिटल कनेक्टिविटी, शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्रों में विभिन्न तकनीकों का परिनियोजन कर रही हैं। मिशन में ग्राम विकास सूचकांक (Village Development Index - VDI) के माध्यम से मूल्यांकन एवं प्रभाव आकलन का भी प्रावधान है।

इस राष्ट्रीय मिशन का औपचारिक शुभारंभ कल 20 दिसम्बर को पाली सांसद श्री पी. पी. चौधरी, तथा 'वन नेशन, वन इलेक्शन' पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के अध्यक्ष, एवं डॉ. (श्रीमती) एन. कर्णेस्ती, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) तथा महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार रामणवरला, निदेशक, सीएसआईआर-सीवीआईआई, रुड़की सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी — जिला कलक्टर पाली श्री लक्ष्मी नारायण मंत्री, श्री मुकेश चौधरी (मुख्य कार्यकारी अधिकारी), डॉ. मर्मेंद्र विंह महता (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास), श्री विशाल सिंह (अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज), श्री सी. पी. वर्मा (कार्यकारी अधिकारी, ग्रामीण विकास), श्री हरि सिंह राजपुरेहित (कार्यकारी अधिकारी, पंचायती राज), श्री पुष्ण कुमार शानी (उपर्युक्त अधिकारी), श्री मनमोहन मीणा (खंड विकास अधिकारी, रोहट) तथा श्री दिलीप सिंह (ग्राम विकास अधिकारी, बोटिला ग्राम) सहित अनेक वैज्ञानिक एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया जाएगा।

000000

(रिलीज़ आईडी: 2206658) आगांतुक पटल : 67

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206540&req=46&lang=1>



## CSIR Smart Village Initiative to be launched in Sawaipura tomorrow on 20th December

Posted On: 19 DEC 2025 5:31PM by PIB Jaipur

The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Ministry of Science and Technology, Government of India, has launched a Mission Mode Project on "SMART VILLAGE", aligned with the Prime Minister's vision of "Viksit Bharat @ 2047".

Under this initiative, six villages located in different climatic regions of India have been identified, namely Sawaipura (Pali District, Rajasthan), Janakpur (Raisen District, Madhya Pradesh), Junakimandal (Jorhat District, Assam), Kusunpur (Kendrapara District, Odisha), Chumathang (Leh District, Ladakh), and Bhada (Kachchh District, Gujarat). This pilot project focuses on integrated village development by improving key development indicators through indigenous CSIR technologies, following the guiding principle of 'Lab to Land'. This mission has been initiated by the Nodal Laboratory, CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, in collaboration with thirteen participating CSIR laboratories.

The participating laboratories include CSIR-IHBT, CSIR-CIMAP, CSIR-NEERI, CSIR-CRRI, CSIR-AMPRI, CSIR-SERC, CSIR-CSIO, CSIR-IICT, CSIR-CLRI, CSIR-NIIST, CSIR-NGRI, CSIR-CMERI and CSIR-CEERI. Initial support was given by Rajasthan Government and Bal Raksha Bharat (Save the children) as an implementing agency. These laboratories are deploying a range of technologies in the areas of habitat planning and development, infrastructure, village roads, agriculture and allied technologies, farm based livelihood, renewable energy, eco-kitchens, groundwater management, wastewater management, disaster risk reduction, environmental protection, digital connectivity, education, and healthcare. The mission also includes evaluation and impact assessment through the Village Development Index.

The national launch of the mission was inaugurated by Member of Parliament, Pali Shri. P. P. Chaudhary, and Chairperson of the Joint Parliamentary Committee (JPC) on One Nation, One Election and Dr. (Mrs.) N. Kalaiselvi, Secretary, Department of Scientific and Industrial Research (DSIR) and Director General, Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), New Delhi, along with Professor, Pradeep Kumar Ramanchandra, Director, CSIR-CBRI, Roorkee, Shri Lakshmi Narain Mantri, District Magistrate (DM), Shri Mukesh Choudhary (Chief Executive Officer), Dr. Mahendra Singh Mehata (Additional Chief Executive Officer, Rural Development, Pali), Shri Vishal Sipa (Additional Chief Executive Officer, Panchayat Raj, Pali), Shri C.P. Verma (Executive Engineer, Rural Development), Shri Hari Singh Rajpurohit (Executive Engineer, Panchayat Raj), Shri Puran Kumar Shani (Sub-Divisional Magistrate), Shri Manmohan Meena (Block Development Officer, Rohat), and Shri Dilip Singh (Village Development Officer, Chotila Gram), along with scientists, who were present at the event. This program will be coordinated by Dr. Kishor Kulkarni, Principal Scientist (CSIR).

000000

(Release ID: 2206656) Visitor Counter : 51

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2206656&req=39&lang=1>

# CSIR-CBRI Roorkee unveils Climate-Resilient Building Prototype at Pilani



**Garhwal Post Bureau**



**ROORKEE, 19 Dec:** In a decisive stride towards low-carbon and climate-responsive infrastructure, the CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, has successfully developed a Climate Resilient Building (CRB) at the CSIR-Central Electronics Engineering Research Institute (CSIR-CEERI) campus, Pilani. Executed under the Fast Track Mission Mode Project of CSIR, New Delhi, the initiative addresses the urgent need to reduce carbon emissions and dependence on energy-intensive mechanical cooling, particularly in India's hot-dry climatic regions.

The innovative facility was inaugurated virtually by Dr N Kalaiselvi, Director General, CSIR and Secretary, DSIR, in the presence of Prof R. Pradeep

Kumar, Director, CSIR-CBRI; Dr. P. C. Panchariya, Director, CSIR-CEERI; and Dr. Ajay Chourasia, Chief Scientist, CSIR-CBRI and Nodal Scientist of the project. Congratulating the teams, Dr. Kalaiselvi highlighted the critical role of sustainable and climate-responsive construction technologies in reducing electricity demand and fossil-fuel dependence. She emphasised that such innovations are vital for meeting India's climate-change mitigation commitments and called for their accelerated dissemination and large-scale adoption.

Highlighting the national relevance of the initiative, Prof R. Pradeep Kumar stated that the construction sector must urgently transition towards environmentally responsible solutions. He noted that CSIR-CBRI has been consistently

advancing safe, affordable and sustainable building technologies, and emphasized that integrating climate-resilient designs into the Government's rural housing programmes—envisioning over two crore houses—could substantially reduce carbon footprints while improving occupant comfort and resilience.

Expressing appreciation for the collaboration, Dr. P. C. Panchariya thanked CSIR-CBRI for selecting Pilani as the demonstration site, observing that the project would act as a catalyst for promoting cost-effective and climate-adaptive construction practices in the region and beyond.

Sharing the technical outcomes, Dr. Ajay Chourasia highlighted that the building achieves nearly 30% reduction in construction water consumption, maintains indoor temperatures 8–10°C lower than ambient

conditions, and conforms to stringent safety and quality benchmarks, while ensuring a low embodied and operational carbon footprint. The two-storey structure, with a built-up area of 225 sq. m., was completed within 90 days, including finishing works, and realized close to 50% cost savings through prefabrication and optimized design.

The building integrates advanced CSIR-CBRI technologies such as concrete-filled cold-formed steel sections and lightweight cellular concrete blocks, combined with climate-appropriate orientation and factory-manufactured components to ensure durability, precision and sustainability. The inauguration was attended by Er. Ashish Pippal, Er. Ashok Singh, Er. Hardev Singh, along with teams from CSIR-CBRI and CSIR-CEERI.

With the commissioning of the Pilani CRB, CSIR-CBRI has now dedicated a series of Climate Resilient Building prototypes across diverse climatic zones—Composite (Roorkee), Warm-Humid (Chennai and Jorhat), Hot-Dry (Pilani), and Cold (Leh). Each prototype is scientifically tailored to regional conditions, incorporating climate-specific strategies such as solar control and thermal mass, enhanced ventilation and moisture management, heat-gain minimization, and high insulation with passive solar heating.

This landmark initiative demonstrates how cutting-edge science, indigenous innovation, and eco-sensitive design can converge to deliver affordable, scalable, and climate-resilient building solutions, reinforcing India's pathway toward a sustainable and low-carbon built environment.



पाली भास्कर 11-12-2025

## पाली

पाली, गुरुवार, 11 दिसंबर, 2025 | 16

### स्मॉर्ट विलेज़ : विकसित भारत 2047 के विजन के तहत होगा विकास, सूची में राजस्थान से इकलौता गांव रोहट के सवाईपुरा को देश के 6 मॉडल स्मार्ट गांवों में चुना

मास्कर संवाददाता | पाली

भारत सरकार ने स्मॉर्ट विलेज नियमन में प्रोजेक्ट के तहत विले में लेट सेट मैट्रिक्स, कृषि राजस्व सुपार रोहट के सवाईपुरा गांव को स्मॉर्ट (एप्पो रेन्यू इंवेंट) विलेज के रूप में विकसित करने के लिए चुना है। एग्रिकलून से यह बेहतर विजनी व्यवस्था, टेली मीडियम, इंटररेक्टिव डेटालैपट, इकॉलैन, और स्वच्छता विलेज व्यवस्था, और स्वच्छता भारत 2047 के विजन को सक्षम प्रवर्भु (हैडब्ल्यूए एंड सीटेलेसन) करने की दिशा में वैज्ञानिक एवं पर विशेष व्यवस्था जैसा औद्योगिक अनुसंधान परिषद सवाईपुरा की जम्मुख्या 1100 है (सीएसआईआर) विकास एवं कुल बजेट 650 है। जल नाम 50 प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने प्रोजेक्ट की जुड़ी है और 18 से कम के 400 शुल्कानों को है। इसमें मध्य प्रदेश से लोटे शामिल हैं। स्मॉर्ट विलेज के जानकारी (एप्पेसेन), लाइफ का कामगी की मौजूदीय करेक्टर करें।

चुम्बक (लैट), असम का अतिक्वान मुख्य कार्यालय अधिकारी चुम्बकमार्गेडल (जोहाहट), विकास तिपा ने बताया कि ओडिशा का कुमुन्दु (केन्द्रालय) सीएसआईआर की विविध और गुरुत्व का भाग (कच्छ) प्रोजेक्टालयों की विशेषता का शामिल हैं। इसका उद्देश्य आधुनिक उपयोग गांव के विकास में किया जाएगा।



#### सांसद आदर्श ग्राम योजना से मॉडल गांव में व्यव अलग है?

सांसद अपने संसदीय क्षेत्र में गांव गोद लेकर आदर्श (मॉडल गांव) के रूप में विकसित करना या इसमें सामाजिक, आर्थिक, बृनियादी वाचा, शासन, मानव विकास आदि। ये सामूहिक भागीदारी और जनप्रतिनिधि नेतृत्व पर आधारित है। जलकि स्मॉर्ट विलेज परियोजना में गांवों को स्मॉर्ट टकनीक, डिजिटल तुलियत, नववाचा, आर्थिक इकाराद्वयर से जोड़ा है। मुख्य तौर पर जल प्रबंधन, स्पार्ट सहकार, सेल व लाइटिंग, डिजिटल सेवाएँ, स्मॉर्ट स्वास्थ्य/कृषि के अलावा ये टेक्नोलॉजी आधारित विकास मॉडल है। सांसद आदर्श प्राप्त योजना को केंद्र सरकार की योजना है। जिसे ग्रामीण विकास मंत्रालय चलात है। लोकिन स्मॉर्ट विलेज परियोजना में अस्मा-अस्मा प्रदेशों द्वारा टकनीकी सहयोग, विश्वविद्यालय, सीएसआर कंपनियों या वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से चलाई जाती है।

Presented in Dainik Bhaskar Newspaper

अनुसंधान

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीवीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण

## ‘समस्याओं के समाधान को विज्ञान की खोज जारी रखें स्टूडेंट्स’

■ पैदानिक जिहारा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

A photograph showing a long, orderly queue of people waiting to vote at a polling station. The individuals are standing on a sidewalk, facing a building that appears to be a local government office or a school. The scene is outdoors, and the people are dressed in casual attire. The line stretches from the foreground into the background, illustrating the high voter turnout mentioned in the text.

इसका वर्णन ही ग्रन्थिभाषा करते हुए किये जा सकते।

नमुने से वैकल्पिक विकल्पों की ताकिया  
प्राप्त करने की विधि विकल्प के विवरण  
एवं वायरल विकल्पों के विवरणों को  
प्राप्त करने के लिए विवरणों का  
नियमित विवरण करने का विकल्प है।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

28.11.2025

## केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई का दौरा

### ■ जिहासा-2.0 छात्र वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत ली तकनीकी जानकारी

रुद्रपी, 27 नवम्बर (अनिल): पीएमश्री केंटीविद्यालय, आईएपए, देहरादून के 101 छात्रों और 6 शिक्षकों ने मगलवार (को) सीएसआईआर-सीबीआरआई दौरा का शैक्षणिक दैरा किया। कार्यक्रम सीएसआईआई-जिहासा 2.0 'छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम' के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. वैदितिकी प्रदर्शनी में गतिशील के भ्रमण से हुई, जहां छात्रों ने सीबीआरआई द्वारा विकासित विज्ञन-वैज्ञानिक मोडलों, नवीन तकनीकों और शोध कार्यों को नज़रीक से देखा। इस दौरान वैरेल कैमानिक डॉ. ताविश आलम



सीबीआरआई का दैरा करने वाले छात्र व अधिकारी।

ने गम पैदल मॉडल संरेत कर्ने प्रश्नोत्तरियों की जानकारी दी। वैरेल कैमान कैमानिक डॉ. नीरज जैन ने छात्रों को जिहासा 2.0 कार्यक्रम के बारे में विद्यारथ से बताया। तकनीकी भ्रमण का दूसरा चरण आरएनटी समाप्त हो आयोजित हुआ, जहां डॉ. ताविश आलम ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नीरज जैन ने जिहासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों और उसकी संरचना के बारे में

अवगत कराया। रोपेश आईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रै. आर. प्रदीपकुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वातानुक्रम में विद्यारथ से बताया। तकनीकी भ्रमण का कक्ष से कार्य संस्करण का अनुदाता असर प्रदान करता है। छात्रों ने ग्रामीण प्रेयोगिकी पार्क, आग्नमुख्य अधिकारियों प्रयोगप्रवाली सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

दो अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक दिवाली अंतर्राष्ट्रीय तैयारियों सहित कार्यक्रम की बैठक विद्यारथ दो दिसंबर महीने के मौसूल के साथ कार्यक्रम का संचालन जारी रखा जाएगा। जानवरों द्वारा गिराये गए जिससे चरवाहे के बैठक में कार्यक्रम

Presented in Garhwal Post Newspaper



Presented in Dainik Jagran Newspaper



# CSIR-CBRI in the Limelight | 21.11.2025



Presented in Dainik jagran Newspaper

## 10 Garhwal Post) www.garhwalpost.in Dehradun, 21 Nov, 2025 Dehradun

### CBRI Roorkee hosts Global OHOW 2025 Meet

**Garhwal Post Bureau**

**ROORKEE, 20 Nov:** The One Health One World (OHOW) 2025 programme, organised by CSIR-Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, began its main event today at Hotel Clarks Sagar, Roorkee-Haridwar. The international gathering saw participation from 13 countries, with 350+ participants and 50+ delegates from different nations.

The programme opened with ceremonial lamp lighting performed by the distinguished guests.

Dr Ajay Chourasia, (Organising Secretary) welcomed all guests and participants and delivered an overview of the event. He highlighted key themes including infrastructure, infrastructure management, public health research in Asia, climate change, sustainable development, and disaster mitigation.

The Director of CSIR-CBRI then addressed the gathering, welcoming all international and



national delegates. He spoke about India's growing economy, the importance of disaster resilience, ongoing retrofitting activities, and the nation's commitment toward building a safer and sustainable future.

A professor from the University of Tokyo, (Conference, Co-Chair) Dr Wataru Takeuchi, Institute of Industrial Science, extended warm greetings to everyone present. He spoke on the OHOW vision,

touching on One Health One World, infrastructure development, disaster mitigation, and disaster resilience, while also appreciating CSIR-CBRI for successfully hosting the global programme.

Professor CVR Murty welcomed all guests and shared his insights on disaster-related issues and research developments.

Dr Krishna S Vatsa, Member of the National Disaster Management Authority (NDMA), addressed the

audience next. He spoke about modern engineering and infrastructure in Roorkee, the historic water canal system, and India-Japan collaboration in disaster management. He also acknowledged Japan's leadership and commitment to global disaster resilience.

The Chief Guest, Professor Kimiro Meguro, Co-Founder of the World Seismic Safety Institute, expressed gratitude for the

invitation. He delivered an impactful address on climate change, industrial disasters, and the importance of scientific and sustainable approaches. He also appreciated Professor Pradeep for his vision and dedication and wished CSIR-CBRI great success for the programme.

The programme concluded with a formal Vote of Thanks delivered by Dr Ajay Chourasia.

After this, different lectures were delivered by various Professors.

A lecture was given by Professor Kimiro Meguro on the topic, "Comprehensive Disaster Management System for Minimising Negative Impact".

After this, a lecture was given by Dr Krishna S Vatsa and Dr Juin Fu Chai.

After this, lectures were given on Urban Safety and Disaster Mitigation, Infrastructure Management and Sustainable Built Environment, International Public Health Research in Asia, Climate Change and Green Recovery by Professors and Scientists.

Presented in Garhwal Post Newspaper

# CSIR-CBRI in the Limelight | 19.11.2025

Ministry of Science & Technology



## CBRI Hosts Pre-Conference Event for the 4th International Symposium on “One Health, One World”

- Pre-conference workshop titled “One World, Many Hazards” organised at CSIR-CBRI
- Participants from University of Tokyo (Japan), COER University and AcSIR India presented posters and oral talks

प्राप्ति तिथि: 18 NOV 2025 6:38PM by PIB Dehradun

CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, organised a pre-conference event titled “One World, Many Hazards” today as part of the upcoming 4th International Symposium on One Health, One World (OHOW-2025).



Participants from the University of Tokyo, Japan, COER University and AcSIR India actively took part in the programme, showcasing their ideas and research through hand-drawn chart-based art forms. Their posters highlighted various global hazards including earthquakes, landslides, pollution, heart-health concerns and pandemic situations. They also presented combined issues along with possible solutions, which were discussed in detail during the session. The poster display was followed by oral presentations, reflecting the participants' creativity, scientific temperament and interdisciplinary approach.



The pre-conference workshop sessions were chaired and the presentations evaluated by Dr. D. P. Kanungo and Organizing Secretary Dr. Ajay Chourasia. The programme was coordinated by Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram.

The event served as a dynamic platform for knowledge exchange and strengthened international collaboration toward addressing global hazards under the overarching theme of “One Health, One World.”

प्रिलियर आईडी: 21013301 आमंत्रक पात्र: 160

Presented on : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191330>

## ‘एक स्वास्थ्य-एक विश्व’ पर सम्मेलन पर चर्चा

रुडीच, 18 नवम्बर (आईएल): केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (संघीयताराइ) में ‘एक स्वास्थ्य, एक विश्व’ विषय पर आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। ‘एकविश्व-अनेक संकट’ शीर्षक से हुए, इस कार्यक्रम में टोक्को विश्वविद्यालय (जागरन), सोशाइटीआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी दर्ज की।

प्रतिभागियों ने चार्ट पर हस्तान्वित कलाकृतियों के माध्यम से भूकंप, भूरुदलन, प्रदूषण, दूध-स्वास्थ्य तपर्याओं और महामारी जैसे विषय आपदाओं से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया। उन्होंने इन कुलांतियों से निपटने के संभावित समाधान भी साझा किए, जिन पर सब के दौरान विस्तार से चर्चा की।



सम्मेलन में प्रतिभाग करते प्रतिनिधियण।

गहं। पोर्टर प्रदर्शन के बाद हुई मीटिंग प्रस्तुतियों ने प्रतिभागियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उत्तमरूप किया। कार्यशाला के रासों की अध्यक्षता तथा मूल्यांकन दॉ. डॉ. कानूनगो और डॉ. डॉ. ब्रजव्य चौरसिया ने किया।

कार्यक्रमका सम्बन्धन डॉ. देवदत

चोप और डॉ. आर. शिवचिंद्रवरम द्वारा किया गया।

यह सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला जानविज्ञय का प्रभावी मंच सिद्ध हुई और ‘एक स्वास्थ्य, एक विश्व’ के व्यापकविषय के अंतर्गत वैश्वक खतरों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ किया।

Presented in Garhwal Post Newspaper

# सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।



सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

जापान व भारत के शोधार्थियों ने आपदाओं और स्वास्थ्य चुनौतियों पर रखे विचार



रुडकी। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” कीं तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

रुढ़की। सीएसआईआर-कैंट्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।



पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुए मौखिक प्रस्तुतिकरण प्रतिभागियों की वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और शोध दृष्टिकोण का उल्कृष्ट उदाहरण रहे।



कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता और मूल्यांकन डॉ. डी. पी. कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम का सफल समन्वयन डॉ. देबदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिद्वरम ने किया।

Presented on: <https://www.shrisangamnews.in/Home/NewsDetails/513>



"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर आयोजित होने वाली चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सीबीआरआइ रुडकी की ओर से आयोजित सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में उपरित विज्ञानी और प्रतिभागी ० सागाए-संस्थान

## आपदाओं से जुड़ी समस्याओं और संभावित समाधानों को किया प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, रुडकी: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुडकी ने "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मंगलवार को सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शीर्षक "एक विश्व, अनेक संकट" रहा।

20 नवंबर को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ होगा।

सीबीआरआइ रुडकी परिसर में सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान चार्ट पर बनाई गई

कलाकृतियों के माध्यम से विचारों और शोध को प्रदर्शित किया गया। जिसमें भूकृष्ण, भूख्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और विभिन्न आपदाओं से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। सम्मेलन पूर्व कार्यशाला सत्रों की अवधिता एवं प्रस्तुतियों का मूल्यांकन डा. डीपी कानूनी और डा. अजय चौरसिया व समन्वयन डा. देवदत्त घोष और डा. आर शिव विंदवरम ने किया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजन सचिव एवं संस्थान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने बताया कि कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान को एक मंच के रूप में कार्य किया।

Presented in Sabhar Sansthan Newspaper

## सीएसआईआर-सीबीआरआई रुद्धकी में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” 2025 के दूसरे दिन प्री-कॉन्फ्रेंस छात्र कार्यशाला का आयोजन

- भारत और जापान के छात्रों और प्रोफेसरों ने एक व्यावहारिक संरचनात्मक इंजीनियरिंग कार्यशाला में भाग लिया।
- सात टीमों ने “भवन और पुल” विषय पर काम किया, जिसका मार्गिदर्शन सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों ने किया।

प्रक्रिया तिथि: 19 NOV 2025 7:32PM by PIB Dehradun

“एक स्वास्थ्य, एक विश्व” 2025 कार्यक्रम के दूसरे दिन सीएसआईआर-सीबीआरआई रुद्धकी में प्रकृत्यापूर्ण प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला आयोजित की गई। विसमें भारत और जापान के युवा प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल 23 छात्रों और टीमों द्वारा (जापान, दीआईईटी देवदत्त, दीआईईटी उत्तराखण्ड, सीआईआर विश्वविद्यालय तथा अकादमी ऑफ साइटेक्निक एवं होटेलिंग)



कार्यशाला के लिए छात्रों की सात टीमों ने विभिन्न विषय गति, जिन्हें “विभिन्न दृष्टिकोणों वाली धीम पर कार्य करना था। प्रतिभागियों का उत्साह और उम्मीद पूरे सत्र की बेहद रोशक और सहजोगामक बनाते रहे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के बारें विशेषज्ञों—जा. डॉ. पी. काम्पोरो, डॉ. अजय शौरासिया (अध्योजन सचिव), डॉ. देवदत्त धोय और डॉ. अर. शिवा विश्वविद्यालय (प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला समन्वयक) —ने छात्रों से सवाल उत्तर देने के लिए अप्रतिरोधी अवसरण से सर्वतोरुप विद्या, साक्षात् अवसरण का लाभ लेने के लिए धूमधार ताकि उन्होंने सर्वतोरुप विद्यालय के महत्व पर विसरग से प्रकाश लाता।



जा. डॉ. पी. काम्पोरो ने 15 छात्रों को संवैधित विषय और अन्य के सम्पर्क में अवसरणना विकास के महत्व पर जोर दिया। जैहाईपूर्ण माझील बनाने के लिए डॉ. अजय शौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेट दिया। इसके बाद डॉ. अर. शिवा विश्वविद्यालय और डॉ. देवदत्त धोय ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मानविकी प्रश्न दिया, जिसमें उन्होंने सर्वतोरुप विज्ञान के संबंधित व्यावहारिक प्रश्नों पर चर्चा की।

डॉ. डॉ. पी. काम्पोरो ने भी छात्रों को संवैधित विषय और आज के सम्पर्क में अवसरणना विकास के महत्व पर जोर दिया। जैहाईपूर्ण माझील बनाने के लिए डॉ. अजय शौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेट दिया। इसके बाद डॉ. अर. शिवा विश्वविद्यालय और डॉ. देवदत्त धोय ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मानविकी प्रश्न दिया। जैहाईपूर्ण माझील बनाने के लिए डॉ. अजय शौरासिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेट दिया।



इन विचार-विमर्शों के बाद छात्रों की टीमों ने अपने-अपने मूक्यरत्न मॉडल तैयार किए, जिन्हें बाद में महत्वपूर्ण लॉकिंग प्रतिस्पर्धियों के तहत प्रदर्शित किया गया। यह कार्यशाला अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच साबित तु है और छात्रों को सूक्ष्मरत्न इंजीनियरिंग में नवाचारणाएँ विजारों को खोजने के लिए प्रेरित किया।

(रिलीज़ आईडी: 2191825) आगामी पट्टा: 17  
इस विज्ञापन को इन भाषाओं में पढ़ें: English

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191825>

## CSIR-CBRI Roorkee Hosts Second Day of “One Health, One World 2025”

- Students and professors from India and Japan participated in a hands-on structural engineering workshop.
- Seven student teams worked on the theme “Buildings and Bridges,” guided by senior CSIR-CBRI experts.

प्रकाशित तिथि: 19 NOV 2025 7:19PM by PIB Dehradun

The second day of the OHOW 2025 program at CSIR-CBRI Roorkee was marked by an engaging pre-conference workshop that brought together young minds from India and Japan. A total of 23 students and four professors from University of Tokyo, Tokyo Denki from Japan, TIET Punjab, NIT Uttarakhand, COER University, AcSIR from India participated in the event.



For the workshop, the students were divided into seven teams, working on the theme “Buildings and Bridges.” The energy and excitement among the participants made the session lively and collaborative.

Senior experts from CSIR-CBRI interacted with the students, including Dr. D.P. Kanungo, and Dr. Ajay Chourasia (Organising Secretary), Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram (Co-ordinators of Pre-Conference Workshop). They discussed various ideas related to building design, bridge structures, and modern infrastructure.



Dr. Ajay Chourasia welcomed all the students and professors, sharing insights about the program and the importance of understanding structural concepts. Dr. D.P. Kanungo also addressed the students. He highlighted the significance of infrastructure development in today's world.

As a warm gesture, Dr. Ajay Chourasia presented roses to all the participants. Later, Dr. R. Siva Chidambaram and Dr. Debdutta Ghosh provided technical guidance on buildings and bridges, explaining practical aspects such as design approach used in building and bridge structures.

Presented on: <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191817>

**CSIR-CBRI in the Limelight | 18.11.2025**



Presented in Dainik Jagran Newspaper

Presented in Garhwal Post Newspaper



## Presented in local Newspaper



Presented in Dainik Jagran Newspaper



Presented in Sahafat urdu daily Newspaper

## नवाचार सोच को बढ़ावा देने पर जोर

- सीबीआरआई में साइंस फेरिट्वल का कर्टन रेजर

खट्टकी लोकसत्ता ।

सीवीआरआई, रुडकी में सोमवार को इंडिया इंटरेशनल साइंस फेरिट्वल (आईआईएसएफ) 2025 के केंटन रेजर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें नवाचारों और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस रहा। इस वर्ष

महोत्सव की थीं "विज्ञान से समर्पित: आत्मनिर्भार भारत" तथ की गई है। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोपदेशकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्योग विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है। आईआईएसएफ का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

### कार्यक्रम की शुरुआत दीप



प्रज्ञलि और वेर्दे मात्रम से हुई। और ईसे प्रमुख हो। नीरज जैन ने स्वयंपात्र मान किया कि विजान राष्ट्र की प्रगति और आमने-संनेही का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और जान-साक्षरकार के द्वारा देने का महत्वपूर्ण मायम है। सीधे आरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनों और व्यवस्था अतिरिक्त डॉ. अशिंग रुद्धी की उपस्थिति का कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रही। डॉ. कानूनों ने छात्रों को विज्ञान और तकनीक अपनाने तक देख के विकास में योग्यतान देने के लिए प्रेरित किया। व्याप्ति अतिरिक्त डॉ. रुद्धी ने खण्डित विज्ञान पर सरस और योगेक व्याख्यान दिया।

## Presented in local Newspaper

## Presented in Hindustan Newspaper



## CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."
- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रतिक्रिया तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Panjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.



Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryaagam. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabilish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindita Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

Published:<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45>

## Uttarakhand : CBRI Roorkee Hosts Curtain Raiser of India International Science Festival 2025



**Roorkee :** Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 was held at CSIR-CBRI, Roorkee on 17 November 2025 at the RNT Auditorium.

This year, the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year's theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated along with faculty members.

Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories but is the foundation of national prosperity, innovation, and sustainable development. He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology, and the limitless spirit of innovation that defines our nation.

Dr. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr. Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy to encourage scientific interest among students. He discussed the primary importance of physics, the relevance of astronomy, evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology, and the use of astronomy to navigate the night sky. He also informed attendees about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as India stands at the crossroads of rapid technological transformations, the nation needs innovators who can solve real-world challenges—from climate issues to healthcare, agriculture, and digital transformation.

**Published in :** <https://yugvartanews.com/state/uttrakhand/post/uttarakhand-CBRI-Roorkee-Hosts-Curtain-Raiser-of-India-International-Science-Festival-2025-3754>



## CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."
- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.
- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रकाशित तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Panjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.



The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.



Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.



Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

(रिलीज़ आईडी: 2190888) आगंतुक पटल : 18  
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Hindi\_Ddn



Presented in Dainik Jagran Newspaper

# विज्ञान से समृद्धि' थीम के साथ आईआईएसएफ 2025 का आगाज़

by cradmin ① November 17, 2025 ② 0 ③ 43


[Home](#) [राष्ट्रीय](#) [अन्तर्राष्ट्रीय](#) [उत्तराखण्ड](#) [राजनीती](#) [अपराध](#) [जीवन शैली](#) [More](#)

NOVEMBER 18, 2025



**देहरादून/रुडकी।** सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुडकी में 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टन रेज़र कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम आरएनटी ऑफिलिएटरियम में संपन्न हुआ। इस वर्ष महोत्सव की थीम “विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत” निर्धारित की गई है। आईआईएसएफ 2025 का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इस वर्ष विज्ञान महोत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम के साथ हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आईआईएसएफ की थीम और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महोत्सव का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मोषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान कर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देना है।

कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी (प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टीट्यूट, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती) की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 एवं बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में शामिल हुए।

डॉ. कानूनगो ने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने भौतिकी की भूमिका, दूरबीनों के विकास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, साइंस सफारी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बदलते तकनीकी युग में भारत को ऐसे नवोन्मेषकों की आवश्यकता है, जो जलवायु, स्वास्थ्य, कृषि एवं डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत कर सकें।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती ने “बिलिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता” विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण कम करने तथा कार्बन फटपिंट घटाने पर पहलापारा विचार साधा किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. हेमलता ने आभार व्यक्त किया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम उपरांत विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया। साथ ही हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की प्रयोगशालाओं एवं प्रदर्शनी गैलरी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में डॉ. पी. सी. थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अर्निंद याइन, राजेंद्र, रजनीश, रजत, अनुज, कु. इक्रा, कु. राशी एवं कु. संस्कृति सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

**Uttarakhand News**

## सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

🕒 Admin - Er. Kapil Garg (B.E. Electronics)

🕒 November 17, 2025



कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रत्नाङ्की, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि, नवाचार और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें भारत की आत्मनिर्भरता में योगदानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह उत्सव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की असीम भावना का उत्सव है। आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।

**PIB DDN-सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टन रेजर कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। आईआईएसएफ 2025 दिनांक 6-9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा।**

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टन रेजर कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम “विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत है”。 उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं के एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के विरास्त में योगदान दिया जा सके।

Published in : <https://galaxyinformer.com/archives/34373>

# CSIR-CBRI in the Limelight | 08.11.2025



मिल्हान एवं प्रौद्योगिकी नवाचार

## जिलासा 2.0 के अंतर्गत सीएसआई-आर-सीबीआरआई में बाल दिवस पर उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिवित कराना तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था।
- विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा।

Posted On: 14 NOV 2025 10:25PM by PIB Dehradoon

सीएसआई-आर-सीबीआरआई भ्रमन अनुसंधान संस्थान (सीआईआरआई), राज्यवाली ने इन्हेसलॉर्ड द्वारा समर्पित जिलासा 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (टूर्नावे) अधिसूचित कर बढ़ावा दिया। यह कार्यक्रम राज्यवाली द्वारा बहुत प्रतिक्रिया लेने वाली विद्यार्थियों के लिए अतिशय किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जहाँ में उद्यमिता और नवाचार की जागरूकता को बढ़ावा देना, भ्रमन के स्टार्टअप इकोसिस्टम के परिवित कराना, तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था। विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा है।



कार्यक्रम की शुरुआत वरिष्ठ प्राचान वैज्ञानिक एवं जिलासा 2.0 के नामत अधिकारी डॉ. गोरख वेंक के स्वागत कर्तव्य से हुई। विद्यार्थी बाल भ्रमण वैज्ञानिक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. चंद्र रमेश यैन ने छात्रों की शुरुआत की शुरुआत कराया। इस अवसर पर निदेशक, सीएसआई-आर-सीबीआरआई डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने बहुती बेहोतरामी और शीर्षित रोलगार अनुरूप उन्हें व्याख्यातिक उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि उद्यमिता रवनामात्र खेद, जीलिंग उत्तम लाभ की कमता, नेतृत्व गुण, समर्पक सामाजिक कौशल और समय व्यक्षित विकास को बढ़ावा देती है। विद्यार्थी युवा अधिकारी और भविष्यत्तेवार बनते हैं। व्याख्यान सही से पढ़ते विद्यार्थियों ने व्याख्यान प्रौद्योगिकी पार्क का प्रमाण किया, जिन्हें उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित उत्पादों को देखा और यह सामाजिक वैज्ञानिक जनरलिन यात्रा के विषय में केवल योगदान देता है। उक्तीनीली बातों में भ्रात के उद्यमिता एवं स्टार्टअप इकोसिस्टम का परिचय-टू-टूवेस्ट, जारीमिता एवं स्टार्टअप की खाल तक सामग्री पहलती की।



जयनाथन की सिद्धांत बुम्पर नायक (प्रियाप्रद देवेश, डॉ.आईटीटी.रुद्रानी), डॉ. गोरख दीक्षित (टॉर्नूओ एवं सम्पादक, गोट्टेम्प) और डॉ. दिलानी शाही (वैनेश, डॉ.आईटीटी.रुद्रानी) द्वारा प्रदान किए गए, जिलासा नवाचार समर्पण प्रणालियों, इन्हेसलॉर्ड यात्रा और स्टार्टअप यात्रा के व्याख्यान प्रहृतुओं पर विशुद्ध जानकारी साझा की। कार्यक्रम का समापन प्राचन वैज्ञानिक इ. आरोपि प्रियता और विद्यार्थियों की रवानामात्र सेव और समाजोंपर्याप्ती समर्पण विकास करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर रवींद्रिंग कुमार, मोहित यात्रा, संस्कृति यात्रा, इकाना, अनुज कुमार, मंजित कुमार, अमावास, अजय कुमार, रवा कुमार, विकास कुमार और राकेश कुमार भी उपस्थित रहे।

Published in : <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190247>

## विचक रीड

### छात्रों को दिया एडवांस सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण



प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राएं।

रुडकी, 6 नवम्बर (अनिल): सेंट्रल विलिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) रुडकी में सीएसआईआर इंटीप्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के तहत कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की गहन जानकारी देना था। प्रशिक्षण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन सीखा। तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्पोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ टीम कृतिका राजे, शारजेद और हिमांशु अग्रवाल ने किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Presented in Hindustan Newspaper

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Mon. Nov 17th, 2025 10:46:18 AM

# सहारा लाइव NEWS

## हर खबर पर पैनी नज़र

Home अंतर्राष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उत्तराखण्ड

### रुड़की द्वारा “सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव”

By Sahara Live News  
0 NOV 6, 2025



CSIR-CBRI, Roorkee Organizes Training Program on COMSOL Multiphysics Software under CSIR Integrated Skill Initiative  
Roorkee, November 6, 2025.

The CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, organized a one-day training program on COMSOL Multiphysics software on 6th October 2025 under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The workshop aimed to strengthen the participants' understanding of multiphysics modeling and computational simulation, bridging scientific theory with practical applications. COMSOL Multiphysics is a general-purpose simulation software widely used for modeling, design, and analysis in engineering, scientific research, education, and industry. Around 40 students from various universities participated in the program and received hands-on training in computational modeling using the COMSOL environment. The technical sessions were conducted by the COMSOL Multiphysics India Pvt. Ltd. team — Ms. Krithika Raj (Applications Engineer), Mr. Sharjeed (Senior Applications Engineer), and Mr. Himanshu Agrawal (Technical Sales Engineer) — who demonstrated the software's key features and guided the participants through interactive simulation exercises. The program was coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, CSIR-CBRI. During the inaugural session, Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, outlined the objectives of the CSIR Integrated Skill Initiative, emphasizing the importance of enhancing technical capabilities through hands-on learning. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, encouraged participants to adopt modern simulation tools like COMSOL to support innovation, design optimization, and research-oriented learning. The program concluded with an interactive discussion and highly positive feedback from the participants, reflecting CSIR-CBRI's ongoing commitment to promoting technical excellence, capacity building, and advanced skill development through the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The training was effectively coordinated with the cooperation of the COMSOL team, and dedicated support from CBRI staff members — Rashi, Iqra, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, whose efforts ensured the successful execution of the event.

सीएसआईआर-सीआरएसआईआर, रुड़की द्वारा “सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव” के अंतर्गत कांसोल मल्टीफिलिस सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन  
दृष्टि, 6 नवम्बर 2025.

सीएसआईआर-सीआरएसआईआर, रुड़की द्वारा विशेषज्ञ विशेषज्ञ इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कांसोल मल्टीफिलिस सॉफ्टवेयर पर एक विवेचीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को निकाल गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रशिक्षितों की मल्टीफिलिस मॉडलिंग एवं सिम्युलेशन तकनीकों की समझ को सुदृढ़ बनाना तथा वेबिनार विद्युतीय अनुसंधान, विद्युत एवं गैजेटों के विकास, मोटरिंग और विद्युतीया के लिए व्यापक उपयोग से विद्या जाता है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षितों को लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कांसोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सर्वोच्च संसाधन कांसोल मल्टीफिलिस इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के लिए एक टीम — सुशी कृष्णन राज (एक्सेक्यूटिव इंजीनियर), श्री चार्ल्स ब्रॉडबेन (एक्सेक्यूटिव संस्थान इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्हें संस्थानीय कांसोल कांसोल कांसोल का प्रशिक्षण और प्रशिक्षितों को प्राप्तीय सिलेक्टिव अवधारणा के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का सम्बन्धन ली गई अवधारणा, अप्प्लिकेशन-सीआरएसआईआर द्वारा किया गया। उदाहरण के लिए, डॉ. निरेश जैन, डॉ. अशीष एवं डॉ. अमित कुमार ने प्रशिक्षितों को कांसोल जैसे अप्प्लिकेशन द्वारा जो अपनी हेतु प्रीरक लिया, विद्युत ने नामांक, विज्ञान अनुसूचन और अनुसूचन-आवधारणा अधिकारा को प्रोत्तरीकृत कर सके।

कार्यक्रम का सम्पन्न एवं संवादावान रूप से एवं प्रशिक्षितों की सहायताकांसोल के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर-सीआरएसआईआर की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता नियां और उत्तम कौशल विकास के प्रति निर्देश प्रशिक्षितों को पूरा संतुष्टि किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सकल संचालन कांसोल टीम के सहायग एवं वीडीओआरआई के कार्यवाचिकों — राजीव, इक्ष्या, रवि, अमृत, संवादी, मधुषा, अद्युज, विकास एवं अव्यय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुवर्ण आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Published in : <https://www.saharalivenews.com/archives/10022>

## CSIR-CBRI in the Limelight | 27.10.2025

**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
**हर खबर पर पैनी नज़र**

जनशक्ति अंतर्राष्ट्रीय राज्य वै टेक्नोलॉजी द्रेवल राष्ट्रीय लोकसंग्रह स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

**उत्तराखण्ड**

### School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee

By **Sahara Live News**  OCT 27, 2025



CSIR-CBRI, Roorkee Hosts Jigyasa 2.0 Program for Students from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun  
Roorkee, October 2025

CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Birla's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR-CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

\*Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.

Published in : <https://www.saharalivenews.com/archives/9967>

## उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

जागरण संस्थान, रुड्की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीवीआरआई) रुड्की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रौ. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सीवीआरआई संसात, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयत्नसंरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहाँ अतिथि बक्ता के स्वर में उपस्थित पूर्णआवास इंटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन केस्टलेट्स प्लाटफॉर्म के मैनेजिंग पार्टनर आशीष राखेजा, डॉ. पीके दास, प्रौ. भूपेंद्र सिंह, प्रौ.

राजशेखर, डॉ. केप्पस कुलकर्णी और अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहाँ पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डॉ. मिकी दलबेहरा, डॉ. ताबिश आलम, डॉ. नवीन निशांत आर्किटेक्ट अनुष, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता आदि उपस्थित रहे।



केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड्की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी । सामाजिक संस्थान

Presented in Dainik Jagran Newspaper

## टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

### ■ विश्व आवास दिवस पर सीवीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

रुड्की, 6 अक्टूबर (अनिल) : विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीवीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रारंभिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रौ. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण



कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी सज्जा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियाँ, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय

चुनौतियाँ, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता आदि उपस्थित आलम, डॉ. नवीन निशांत आर्किटेक्ट अनुष, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

## सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper

**CCM** N/A

N/A

## सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह डॉ. पेम्मासानी

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सख्ते घरों की राहः डॉ. पेम्जासानी

- देश के पहले 3Dी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन
- पीएमएवाई—(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ सकान द्वा सीकृत



— 10 —

एसबीआर्ड सेलाकर्ड ने लगाया गिरिर

लोकान्तर दासापुरुष का लोकान्तर है। देवदारा । पांडा ने देवदार के विवाह में सामने आया था कि अन्त न हो पहुँच के उपरेक्षा से भासीती स्टेट कैम, सेल्फी होना आज बहुत बड़ा बदलाव है। विवाह में देवदार का विवाह संस्कार की विधि का अनुसार होता है। इस विवाह में वेद संस्कार में जागीरों को जागीरी कहते हैं। विवाह में रोने कर बड़ा, विवाह में रोने का बड़ा बदलाव है। विवाह में देवदार का विवाह संस्कार (दीपविवाह), मालवापक (आरोपावेदा), शुभा कृपा, मालवापक (नारद), प्रोत्तो रत, मालवापक (रेतवीवाह) का विवाह करते हैं। कृपा, ताम वापक (सप्तविवाह) उपर्युक्त है। इन अधिकारियों को विवाह में बैठने और अस्त्रों और विवाह में बैठने वालों को विवाह में बैठने की विधि के दोनों वालों को प्रसादमात्री जीवन वाले योग्य, प्रसादमात्री वृद्ध वाले योग्य वा वृद्ध-योग्य के विवाह के बारे में वरापा यह।

## प्राइवेट अकाउंट

Published in Dainik Bhaskar

देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट स्प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## देश के प्रथम थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

केंद्रीय राज्य मंत्री डा पेम्मासानी ने सीवीआरआइ का किया दौरा



- ० डा. ईमारानी ने कहा, नवाचार से शामिल आवास को सप्तने से हैकीट में बदल रहे
- ० भारत की शामिल आवास द्वारा में एक महत्वपूर्ण सेल का पत्तर है : केंद्रीय राजनीति

Published in Rashtriya Sahara

## देश की पहली 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

### देश की पहली 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

■ ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने किया

उद्घाटन

■ पीएमएवाई(ग्रामीण) के तहत 3.85

करोड़ मकान स्वीकृत 2.87 करोड़ पूर्ण

■ केंद्रीय मंत्री ने रुद्राक्ष उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास पुस्तक का भी किया विमोचन

देहरादून/रुड़की(प्रसापनवी)। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआई आरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास योजना का एक निर्णायक ध्वनि है, जो पर्यावरण ज्ञान को आवृत्तिकर्तम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकार्ताओं और हितधारकों को सेवानित करते हुए डा. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कलानी देवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुविधा, मजबूती और टिकाऊत उपलब्ध कराने की अद्दृ प्रतिक्रियाएँ प्रदान की हैं। यह 3डी प्रिंटेड घर केवल



3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चन्द्र शेखर।

तकनीक नहीं है, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक है, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील

और पर्यावरण-अनुकूल होगा। डा. शेखर ने योजना के अंतर्गत आव तक 3.85 करोड़ मकान स्थीरूप हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्तरज आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आव में 17 वर्षीय वृद्धि हुई है, असामाजिक जाने के मामलों में 14 की कमी आई है और 72 घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को मजबूती दिली है।

उद्घाटन समारोह में सीएसआई आरसीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. आराईटी रुड़की के संस्कार सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रीलिंिंग, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Rashtriya Sahara

# Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

## Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

PIONEER NEWS SERVICE ■ Roorkee

The union Minister of State for Rural Development, Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI) here on Wednesday.

Speaking on the occasion, Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology but they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awas Yojana - Gramin (PMAY-G) the union minister said that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He informed that independent assessments show a 17 per cent rise in household incomes, 14 per cent decline in hospital visits

and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over five crore rural households to live with dignity

ments culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the State.

The union minister urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

"Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India," he said.

Senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the ministry of Rural Development, social organisations and students attended the programme.



under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh - Rural Housing in Uttarakhand', which docu-

Published in Pioneer

# कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

## कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

न्यूज वायरस नेटवर्क

कड़की 02 अक्टूबर : ग्रामीण विकास नायक मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई) कड़की में देश का पहला 3डी कंट्रोल प्रिंटेर ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन किया। यह एकानिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक विनायक बहाना है, जो पारिवारिक जन को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिक, शोधकर्ताओं और टिकटाकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत में सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाक घर उपलब्ध करने वाले अद्यत प्रतिक्रिया द्रविदीन की है। ये 3डी प्रिंटेर घर के बाल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे अधिक काम प्रोत्तेक हैं, जहां आवास समूह, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होता है।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने कहा कि

- डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुद्रकी में देश का पहला 3डी कंट्रोल प्रिंटेर ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन
- पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्थीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा
- केंद्रीय मंत्री द्वारा "द्वादश - उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन
- पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेर घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया गया

योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ तैयार किए हैं। इनके अधिकारी, गैर-मकान स्थीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। इसलिए आकलने से यह भी सम्मान मजबूती तकनीक और दो-ग्रामीण विवरण आवास की वृद्धि हुई है, अस्थान जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर मौजूदाओं के नाम पर है, जिससे मौजूदा सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिलती है।

इस अवसर पर केंद्रीय वायरस मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "द्वादश - उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखण्ड राज्य की संस्कृतिक रूप से बुड़ी, टिकाक और बलवान्-संवेदनशील



आवासीय परिपालन का संकलन है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने कहा कि यह एक अवधारणा है, जिसके द्वारा भवित्व ने विकास के दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आश्रम किया कि यह 100 किफायती 3डी प्रिंटेर घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के द्वितीय इमारत तकनीक द्वारा संबोधित हो सके। इस तकनीक की व्यवस्था सिद्ध हो सके उन्होंने संवाद को लापीय आराम, नवीकरणीय कर्तव्य एकोकरण, बलवान्-ग्रामीण द्वारा और मूल्यवान् विवरण आवास की सुरक्षा देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे विमोचन परिवारों को स्वास्थ्यनिवारण कर सके।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा -

"विकास के बाल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आर्थिक सुरक्षा से पूरे हों। सीबीआरआई जी के वैज्ञानिक उत्कृष्टता वाले विवरण भारत 2047 को दूरी से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाक ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।"

उत्तराखण्ड समरोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिएट वैज्ञानिक, आईआईटी रुद्रकी के संवेदनशील, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, समाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in News Virus

# डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

सुमित तिवारी / उत्तराखण्ड प्रहरी  
ब्लूरू

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3 डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धत प्रदार्शित की है। ये 3 डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण



(पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-

रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीके और दो-गड्ढी शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पौच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष - उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखण्ड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3 डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय कर्जा एवं एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिल्की प्रशिक्षण पर विशेष ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - "विकास के बल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में हैं जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttrakhand Prahari

# रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

## रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

अमर हिन्दुस्तान  
रुड़की। ग्रामीण विकास गवर्नर मंडी डॉ. रमेशसाहनी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सोसाइटी ऑफ़ इंजीनियर्स रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐंड्रियोनिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास याज्ञ का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हिन्दुस्तान को संबोधित करते हुए डॉ. रमेशसाहनी चन्द्र शेखर ने कहा, "कवच दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाका घर उत्पादक करने की अटूट प्रतिष्ठाना प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल



तकनीक नहीं है, बल्कि एक ऐसे भविष्य का करते हुए डॉ. रमेशसाहनी चन्द्र शेखर ने कहा, "कवच दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाका घर उत्पादक करने की अटूट प्रतिष्ठाना प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वीकृत आकलनों से यह भी समने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आप में 17 प्रतिशत की चूंडि हुई है, असलाल जग्ने का भास्तव्य में 14 प्रतिशत की कमी आई है

और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर है, जिससे महिला सशक्तिकरण और परिवारिक कल्याण को बढ़ाव़ा भी मिलती है।

सौभीआरआई के योजनावाली की संरक्षण करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 शेष-डिजाइन और मिली प्रशालण पर विशेष ध्यान देने की कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सभी ग्रामीण परिवारों को लकड़ीनिक कर सके। उन्होंने संशोधन के अंत में उन्होंने कहा ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया। जिसमें उत्तराखण्ड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परिवारों का संकलन है। विविध जीव विवरण पर जल देते हुए डॉ. शेखर ने सौभीआरआई से आगाह किया कि वह 100 विकासी उटी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे

ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवस्था सिद्ध हो सके।

उन्होंने संस्थान को तारीय आराम, नवीकरणीय डॉक्युमेंटेशन, जलवायु-ग्रीष्मी डिजाइन और मिली प्रशालण पर विशेष ध्यान देने की कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सभी ग्रामीण परिवारों को लकड़ीनिक कर सके। उपने संशोधन के अंत में उन्होंने कहा विकास के बाल महान बनाने तक सहित नहीं है।

बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो गेशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हो। सौभीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विवरित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए, हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाका ग्रामीण भारत की नीति रख रहे हैं।

Published in Amar Hindustan

# Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

## Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR-CBRI, Roorkee

- From Mud Walls to 3D Printing: CBRI Pioneers Affordable Homes for Rural India : Dr. Pemmasani
- Over 3.85 crore houses sanctioned and 2.87 crore completed under PMAY-G, bringing dignity and security to crores of rural families
- CBRI develops 250 region-specific, disaster-resilient housing designs; innovates non-erodible mud plaster, low-cost strengthening techniques, and two-pit pour-flush toilets under Swachh Bharat Mission
- Book "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand" released by Union Minister
- Call for piloting 100 cost-effective 3D printed houses under PMAY-G

**Roorkee (The Hawk):** Union Minister of State for Rural Development, Dr. Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awas Yojana-



Gramin (PMAY-G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr. Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr. Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over

5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr.

Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and manpower training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in The Hawk

# डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

**कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी**



पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज कोट्टोरी भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला

3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। वह पैतृतास्तिक नवाचार

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए, डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और

34% मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर मजलियों के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती दिलाई है।

सीबीआरआई के योगदान की सहजन करते हुए उन्होंने कहा है कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विविध आवास-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-ज्ञानातील मिट्टी का पालनकर, कम लगान वाली मजबूत तकनीकें और दो-गृही जीवालय प्रणाली जैसे वराचारों ने पौधे करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सहाय करना चाहा है।

इस अवसर पर कोट्टोरी राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने रुदांड - उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखण्ड राज्य की सोसैटीक रूप से जुड़ी, दिक्कांड और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य को दिखा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि

### "ग्रीन दून - क्लीन दून" विषय पर विशाल दौड़ गांव अलोगांज ग्रामीण गिरिजा द्वा ग्रामोन्नत

Published in India Warta

वह 100 किमीवाली 3डी प्रिंटेड घरों का यातानट प्रोजेक्ट मंचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इन वर्षोंकी व्यवहारीयता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को लपेय आग्रह, नवीकरणीय उच्च एडीक्युकेशन, जलवायु-टोटो डिजाइन और मिली विशिष्ट वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों जैसे लाभान्वित कर सके। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बाद में ही जी रोजनी, गरिमा और आवश्यकता से भरे हों। सीबीआरआई जैसे वैज्ञानिक उच्कृता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और दिक्कांड ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

## اجراء عرض کا کتاب ریائش، دیہی میں اترا کھنڈ درکش رو

رودرکش- اتراکھنڈ میں دیہی رہائش، کتاب کا رسما جراء

CBRI-CSIR، روزگی میں ملک کے سامنے 3D سکنر یہ پرست شدہ دیجیٹی گھر کا افتتاح کیا



روزی: دینی ترقی کے دیے گئے 30 کمز  
امسائی پندرہ میگر لے آئے، روزی کی سفر  
نکنگ، بریز بنسن نیٹ  
3D (CBRI-CSIR) میں ملک کے پہلے  
اگریٹ پرست شد و میں گرفتار کا انتظام آیا۔ یہ  
تاریخی اخراج ہندوستان کے دینی ایکٹریٹ میں  
ایک اہم بے کی تاریخی ترقی ہے، جو راجحہ کو  
ہندو یقیناً اور کیتھولیک کے ساتھ مردود کرنے  
کے سامنے آؤں، کھینچنے، اور استیک جو اور ز

سے مطاب کرتے ہوئے، واکٹر مسماتی پر  
مشکرے کیا، "میں کی دیواروں سے اے اے  
3D، پر جگ ہک، بندھو جان نے سب کے لئے کھو،  
میخوڑا، پائیں اور مکاٹت قراہم کرنے کے لئے  
ایک نیم حوالہ عزم کا مظہر ہے کیا ہے۔ یہ  
3D، پر شدہ گھر صرف بیکاری کیسیں ہیں، بلکہ  
مشکل کی ایک علامت ہیں، جیسا ایک خالی  
مکاٹ، اور جو چل اجڑا مشکل ہے۔ "اے یہ مظہم  
جاتا تھا، جو موہر کی قیادت میں یہ دھان خڑی  
آئا، جو جگ گرائی (G-PMAY) کی  
کامیابیوں پر دوڑی الاتے ہوئے، واکٹر مشکرے  
کیا کا اس ایکم کے قات اپنے 38.5 میل

Published in Sahafat

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

डॉ. पेमासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुडकी में किया

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

नागरिक व्यापी  
रुद्रकी प्रयोग विकास  
राय द्वारा लिखी गयी व्यापारीय व्यापक  
शेखर ने आज कोडीय व्यवहार  
अनुसार धारा व्यापक (शेखर  
एमी आर-सीवी आरआई),  
हक्को में देखा का वाला 3 द्वीप  
कोडीट विटेंड ग्रामीण आवास का  
ठुड़ापाटा लिखा। वह  
ऐसीविंशति नवाचार भारत को  
ग्रामीण आवास लाना का एक  
विनायक लक्षण है, जो चारोंपक्ष  
जन को अधिकारित हकीकीक  
में जड़ता है।

वैज्ञानिकों, साथकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पंग्रामानी चन्द्र शशीकूल ने कहा, "कच्ची दौवारों से ३ डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उत्पालन करने की अद्भुत प्रतिक्रिया प्रदर्शित की है। ये ३ डी प्रिंटेड घर



क्षेत्र लकड़ीक नहीं है, बल्कि पर्यावरण-अनुकूल होगा।" एक ऐसे भावाव का प्रतीक जैसे आवास संस्करण वे ने भी बनाये हैं और ये जैसे आवास की अवधि के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास अनुकूल नहीं हैं।

स्वीकृत हुए हैं और 2.87 ग्राम प्रति चम्कि हैं। स्वतंत्र आकालनों में यह भी सामने आ जाएगा।

आपा है कि यात्रीय परिवहनों को आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्तरात जाने के मायने में 14% की कमी आई है और 72% यात्रा महिलाओं के बाम पर हैं, जिससे महिला सरकारीकरण और यात्रिकारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

को सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि वंशजों में 250 हैं जो विशिष्ट आपाद-टो एवं असामी जाति का जन तैयार किया है। इसके अतिरिक्त, मैर-वाराणीसील मिट्टी का पतलार, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गुना शीतलता प्रणाली जैसे नवाचारों में वर्षा करोड़ से अधिक यांत्रिय परिवर्ती को सर्वत्र

यह किशोर व्यापार देने को कहा जाता है औ इसका नवाचार सीधे यामीण परिवारों को सामान्यतः

Published in Param Nagrik

## ऐतिहासिक कदम: रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

**ऐतिहासिक कदम:** रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुक्षीय। ग्रामीण विकास रूप मेंी, दूर-पर्यावरणीय चर्च शीरक ने आज इसकी व्यवस्था अनुवान संस्कारण (सीएसआईआर-सीसोआरआई) रुक्षीय में देखा के पहले ३८ कांक्षिक दृष्टि ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक बवालाया भारत की ग्रामीणीय आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण माहौ है, जो पारंपरिक जाति का अपूर्वानुभव तथा टिकाऊ यथा उत्तमतम सर्वोत्तम मजबूती और टिकाऊ यथा उत्तमतम करने को दिखा में नहीं रहा दिखाया।



आयास योगाना-ग्रामीण (पीएमस्वार्वाच-  
द्वारा) की सफलता को उल्लेख किया गया। उन्होंने बताया कि इस योगाना के अंतर्वात  
अब तक 3.85 करोड़ लोगों को सालाना  
जून ही अंतर्वात 2.87 करोड़ रुपये थोड़े  
हुए बताया कि इस योगाना से ग्रामीण  
परिवर्तनों को अब में 17 ग्रामियाना की  
जुड़ाव देता है, जबकि 72 ग्रामियाना की  
महिलाओं को जब तक पहुँच देता है। ग्रामीण महिलाओं को जब तक पहुँच देता है।  
साथसाथकरण को मजबूती मिलती है। तृं  
तृं शोधकर ये ग्रामीण अवासों  
से सीधे आई और जीवी और आई के  
महण्यांशों योगाना की सहायता की  
उन्होंने बताया कि संस्थान ने अब तक  
250 क्षेत्र-विवरण अपार्टमेंट और  
अवासों की वितरण नियम किए हैं। इनके  
अलावा, गैर-प्रयोगीलैंगिक मिलों  
परिवार, कम तक्का वाली मवक्कियत  
तकनीकों और स्वच्छ भारत मिशन के  
अंतर्वात दो-ग्रामीणीय सालाय यात्रानी के  
नामांतरों से पौर रुकोड़े से अधिक  
ग्रामीण परिवर्तनों को लाप्त मिलता है।

इस अवसर पर, केंद्रीय राज्य में ने  
रुदायत-उत्तरायण में ग्रामीण अवासों  
की वितरण का विभिन्न रूप दिया

इस प्रकार में उत्तरांशद रथय की सामाजिक रूप से जड़ी, दिक्कां और बलवानी—संवेदनों की आवासीय प्रयोगों का विवर संबंधित है। विविध की योग्यताएँ पर बढ़ देते हुए दूर, पर्यावरणी ने सोशल अंतर्गत से अपना विकास किया कि वह एक विद्यार्थी के लिए विद्यालय से प्राप्तीयों पर निर्भाया भाव के संबंधित होने वाली लोकान्तर का सक्षम। अपने अपने अन्तर्गत विद्यार्थी के लिए, इस अत्याधिक तर ज्ञानान्वयिकता सिद्ध होने से संबंधित को तापीय आवासीय तंत्र एक विकास है, जिसका द्वारा और मिसनी प्राचीनतावाली विवरण की कठोरी को कम किया जाता है। इसकी विवरणीयता विवरण की विवरणीयता के लिए विद्यार्थी को लोकान्तर का सक्षम होना चाहिए।

Published in Vichar Suchak

## Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI

## Dehradun

Dehradun, 2 Oct, 2025

www.garhwalpost.in (Garhwal Post 11

## **Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI**

### **Garhwal Post Bureau**

**ROORKEE**, 1 Oct: Union Minister of State for Rural Development, Dr Pemmasani Chandra Selhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environment-friendly." [www.indiaenvironmentportal.org.in](http://www.indiaenvironmentportal.org.in)

and environmentally responsible."

2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand', which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the state.

Looking ahead, Dr Sekhri urged CBERI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is no

about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of *Viksit Bharat 2047*, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR-CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

---

150

Published in Garhwal Post

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ.  
पेम्मासानी ने किया  
देश के पहले ग्रामीण  
आत्माम का उद्घाटन

रुक्की। केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री द्वारा पेमासानी बन्दरगाह रेल आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुक्की में देश के पहले ढाई क्रोड प्रिंटर ग्रामीण आवास के उद्घाटन किया।

वैज्ञानिक, शोधकर्ताओं और हितारकों को संबोधित करते हुए डॉ.

चन्द्रोदयर ने कहा, कवी दीवारी से ३३ प्रिंटिंग तक भारत ने सभी चेतावनियों लिए, सुरक्षित, मजबूत और रिकाओं पर उल्लंघन करने को प्रतिवक्तव्य प्रदर्शित की है। ये ३३ प्रिंटेड चेतावनियों के बाहर तकनीक नहीं हैं, बल्कि ये ऐसे भविष्य को प्रतीक्षा करते हैं, जहां आवास स्थानों और पर्यावरण अनुकूल



होंगे। प्रभानन्दी ने नोटे के नेतृत्व में प्रधानमंत्री अमित योगी-मुख्यमंत्री को उत्सवीयों का उत्तमता करते हुए उल्लंघन कराया कि योगान के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मरकान स्थैतिक हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकर्तुओं से वह भी सन्मेह होगा कि योगान के अंतर्गत अमित योगी के मरकान में 17 प्रतिशत की उम्मीद है और 72 प्रतिशत को कम है और 72 जिसमें मरकान मरकानकरण और पारारारिक कल्याण को मजबूती

मिलते हैं। सोसीज़ अब अहंकार के योगदान को समझ करते हैं और उन्हें अपने लिए समझने के 250 शेष अवधारणा-रोधी आवासीय दिवाजान तैयार किए जाते हैं। इनके लिए गर-भर-विकास निवास का प्रसारण करना तात्परी मन व बुद्धि तन-कोंक और दो-दो ग्रामीण-समाजों की साथीता के लिए जाता है। अपनी काम के लिए उन्हें सम्मान के तात्परी का आवास-निवास किया जाएगा। जलवाय-रोधी दिवाजान और सिल्वर प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने की कठिन कार्रवाई विकास निवास का प्राप्ति-प्राप्ति विकास को सम्पादित कर सकती है।

पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवर्तनों को स्वच्छ भारत भिन्न के अंतर्गत ग्रामीणीय जीवन जीने में बदला जाएगा।

Published in Uttar Ujala

# डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

## डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

पीआईबी

देहरादून/रुड़की १ अक्टूबर । ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह प्रैतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो यारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, “कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी को लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिवेदन प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।” प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजनाखग्रामीण (पीएसएवाईखंडी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना को अंतर्गत अब तक ३.८५ करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और २.८७ करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों

पीएसएवाई-ग्रामीण (ग्रामीण) के तहत ३.८५ करोड़ हुए पूरे, कोडोंगे ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुक्षा। सीबीआरआई ने विकसित किए २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन; नवाचार में गैर-क्षरणशील मिट्टी की पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड़ा शैचालय प्रणाली।

केंद्रीय मंत्री द्वारा “रुद्राक्ष ख उत्तराखण्ड में ग्रामीण आवास” पुस्तक का भी किया गया विमोचन।

पीएसएवाई-ग्रामीण के तहत १०० किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आहवान।



से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम परिवारों की आय में १७% की वृद्धि हुई लागत वाली मजबूती तकनीकें और है, अस्पताल जाने के मामलों में १५% की कमी आई है और ७२% घर महिलाओं ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखण्ड

राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह १०० किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा ख “विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में हैं जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत २०४७ को दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।” उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के सकाय

Published in Kalam Ka Daitwa

# India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

## India's 1st 3D-printed rural home comes up in Roorkee

Tapan Susheel | TNN

**Roorkee:** India's first 3D concrete-printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee on Wednesday. The prototype, built under the Pradhan Mantri Awas Yojana-Gramin (PMAY-G), was developed to offer a fast, affordable and sustainable housing solution in village settings using advanced construction technology and eco-friendly materials.

Union minister of state for rural development Chandra Sekhar Pemmasani, who inaugurated the structure, said it marked a



The 3D printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute

significant milestone in India's rural housing journey. He said the house blends traditional wisdom with cutting-edge science and represents a scalable model that can be replicated in rural India.

►Continued on P 7

# Agro-industrial waste used in Roorkee's 3D house

►Continued from P 1

These 3D-printed houses are not merely about technology — they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible," Permasani said.

In April 2021, finance minister Nirmala Sitharaman unveiled India's first 3D-printed house at IIT-Madras. Developed by the startup Tvasta Manufacturing Solutions, the 600sqft urban prototype was designed to offer affordable housing for low-income families in cities and was completed in just five days using a proprietary concrete mix. However, that house was not part of any rural housing scheme.

The Roorkee house, by contrast, is the first rural version designed under PMAY-G by scientists at CSIR-CBRI. Unlike the IIT-Madras model, it uses sustainable cement mixes incorporating agro-industrial waste such as fly ash and bagasse ash. It is also aligned with PMAY-G norms for rural homes, which include essential amenities.

Researchers said the prototype demonstrates significant time and cost efficiency. A rural house measuring 25 square metres can be printed in under a week at an estimated cost of Rs 1.8 lakh, compared to four to five months needed for traditional rural

construction. The CBRI model is designed to last over 70 years. "This is the first time 3D printing has been directly applied to rural housing delivery, combining speed, affordability, and green materials for scalable village use," said Dr Ajay Chourasia, chief scientist at CBRI. He led the project along with scientist Ashish Kapoor.

Permasani also cited achievements under PMAY-G during PM Narendra Modi's tenure, noting that 3.85 crore houses have been sanctioned so far, with 2.87 crore already completed. He said independent studies have reported a 17% increase in household incomes and a 14% reduction in hospital visits due to better housing. Additionally, 72% of the houses were registered in the names of women, contributing to women's empowerment and family well-being.

He acknowledged CBRI's past innovations, highlighting its development of over 250 region-specific, disaster-resilient housing designs, and rural technologies like non-erodible mud plaster, simple strengthening methods, and the two-pit pour-flush toilet system that benefitted over 5 crore households under Swachh Bharat Mission. "Today's inauguration marks the beginning of its journey into the villages of India," said institute director R Pradeep Kumar.

Published in Times of India

## देश के पहले उड़ी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

### देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

#### ■ कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई

रुडकी, 1 अक्टूबर (अनिल) : ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुडकी में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने



पुस्तक का विमोचन करते केंद्रीय मंत्री व अन्य।

सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अट्रॉट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूल नशील और पर्यावरण अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया

कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण और परिवर्तक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुडकी के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Navodaya Times

# CSIR-CBRI in the Limelight | 30.09.2025

**Rooree: लीबीआरआई-सीएसआईआर ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस**

Published in : <https://www.nazariyanews.com/33986/>

Published in: Swatantra Chetna Newspaper

सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

वर्तने वेतन  
रुक्ती की। सीरीसाइआर्ड – के द्वारा  
भवन अनुसंधान संस्थान (सीरीसाइआर्ड)  
रुक्ती की रोटीवाला टॉपर अनुसंधानिक  
एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीरीसाइआर्ड  
का 840 व्यापार विवास भी धूममच रे  
मनाया। इस अवसर पर, भवन  
एवं अनुसंधान में संरचनाएं के उल्लेखनीय  
योद्धाओं को स्वामी किया गया।  
कार्यक्रम के मंकर्मवारियों जैसे और आम  
गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाव  
पूर्व कुरालाम्ब बासर के द्विनिवारण  
एवं प्रमाणीकरण संस्थान, गाधीनगर मुख्य  
अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह  
की शुरुआत एक प्राप्तवान के साथ की  
इसके बाहर सीरीसाइआर्ड – सीरीसाइआर्ड  
रुक्ती की निवेदिका प्रा. आर प्रतीप देव  
ने श्यामल भाषण किया। अपने भाषण में  
उन्होंने संरचना के विवादों पर प्रकाश  
दाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान के  
विकास सुविधाओं की भी रेखाखिला  
किया। इसके पश्चात एक वर्ष के अंतरात  
में सीरीसाइआर्ड – सीरीसाइआर्ड की सेवा  
से अधिकारियों पर संवेदनशुल्क हुए कार्यक्रम  
को मुक्त अतिथि द्वारा सम्पन्न पर, शर  
काली और लाई घी भट्ट कर सामनित किया  
गया। साथी 25 वर्ष की निररंतर सेवा प्रू  
पमिति को प्रसादी किया गया।

कर सुके कार्मिकों को भी कलाई घंटी भेटी गई। इसके पश्चात उत्तराखण्ड अधिकारी ने उत्तराखण्ड में सरकार के प्रयान विकास बड़वान स्वरूप मीना द्वारा विकासित सोलां एवर कान्फिननर और गार लीटर एवं ट्रॉन-टोनक का प्रायोगिकी हस्तांतरण का स्वरूप दस्त द्वारा सूख पुणे, महाराष्ट्र की दिया गया। यह अभिनन्दन तकनीक, जो दक्ष हीटिंग और रसेस कॉर्टिंगिंग समानान्वयन करते हैं तथा सूख को एवं कान्फिननर के साथ-साथ मीना की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसके पश्चात दक्ष, डीपीका कान्पानो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्वास्थ्याना विवरण आयोगी तथा सीरीज़ ने मुख्य अधिकारी पदस्थान परीक्षा में सुखी कुमार जेन का परीक्षण प्रत्युत्तम किया। मुख्य अधिकारी ने अपने सरोकार में सीरीज़ इंडिया-सीरीज़ आरकारों का उत्तरालिखित पर बधाई दी और कहा कि नव तकनीक भवन विकास को नव दिशा देंगी।

के साथ-साथ भारतीय को डॉक्टर सुखाश के पास एक विकास लेवल को पूरा करने के लिए भी सहायता दिलाई गई। साथ ही यह यह एक काम की जैविक अनुसन्धान के

लिए परस्यर स्वयंग एवं साकारकम् अवश्यकः ॥ प्रदीप्ति कुमार वरिष्ठ प्राप्तानि नियन्त्रक न सभी क व्यवहार दिया ॥ इस आयोगम् समिति के अध्यक्ष अवश्यक कुमारन्, मुख्य अध्यक्ष वरिष्ठ रहे ॥ प्रो. आर. प्रदीप्ति कुमार ने समाचारों के मुख्य अतिथियों को स्वीकृत विद्या और शर्त भेदभावी कार्यक्रम का साचालन प्रो. एप्ले के सिंह, मुख्य अध्यक्ष वरिष्ठ द्वारा किया गया था ॥ इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गुह एवं यात्रिक अनुप्रयागों के लिए स्वाक्षरण एवं विचरणावाला (आडाना) आईटीटी प्रोप्रोसेसिंग का उदाहरण किया ॥ यह प्रयोगशाला वर्चमान परले, वैज्ञानिक कार्य की सोलीसिंग वैज्ञानिकय तथा डस्केप कार्यालयों, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है ॥ इसके अंतरिक्ष, निमाना प्रौद्योगिकी परीक्षण करने वाली एवं अधिकारियों की परीक्षण सुविधा ॥ (अम्ब) और 32 की कंटीट वैज्ञानिक अधिकारियों के प्रयोगशाला के भ्रमण का साचालन ड. अंजलि वैरीरामन, मुख्य वैज्ञानिक, आपारा प्रौद्योगिकी प्रयोग वैज्ञानिक, ड. विश्वास कुलकर्णी वैज्ञानिक, ड. वर्चल सोनकर, प्राप्ति वैज्ञानिक और आपारा कृष्ण वैज्ञानिक द्वारा किया गया ॥ इसके साथ ही, मुख्य अध्यक्ष ने प्रदीप्ति गेलरी का भी भ्रमण किया कार्यालय का समाचार राह गान के साथ हुआ ॥ इस अवसर पर एक सारीतक सच्चाया का आयोगीन भी किया गया ॥

Published in: Swatantra Chetna Newspaper



अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

## सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुडकी। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुडकी ने रवींद्रनाथ टैगोर आॉडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पदमश्री प्रो. सुशीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप

कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंकरीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik jagran Newspaper

**राष्ट्रीय सहारा**

सीबीआरआई की टीम ने किया आपदा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण

हरिहर। मानसून काल के दौरान जनपद में आई बाढ़ एवं आपदाओं से हुई वास्तविक क्षति के आंकलन के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राप्तिकरण द्वारा पोस्ट डिजिस्टर नोइस असेसमेंट प्रक्रिया के तहत गठित सर्वेक्षण टीम ने सीबीआरआई के चौक साइटिस्ट डा. अजय चौरसिंह के नेतृत्व में रत्नवर को जिला आपदा कार्यालय समाचार अधिकारी में बैठक लेकर तथा आपदा प्रभावित एवं पूर्वसून क्षेत्रों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण किया गया। सचिव एवं आरडीए मनोप कुमार सिंह ने बैठक का संचालन करते हुए जनपद को समाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौतिक विश्वास के बारे में जानकारी देते हुए मानसून काल में हुए नुकसान के बारे में पारंपरागत प्रजेन्टेशन के भाष्यम से विस्तार में जानकारी दी।

बैठक में सीबीआरआई के चौक साइटिस्ट डा. अजय चौरसिंह ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपदा समन्वय से बरसात के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में जाने वाली बाढ़ तथा होने वाले नुकसान को रोकने के लिए प्राक्षेत्री कार्य योजना बनाकर भारत सरकार में बेळा जाये। उन्होंने सिंचाई विभाग के अधिकारीज्ञों को निर्देशित करते हुए कहा कि बाढ़ एवं भू-कटाव को लिए लोग टर्म स्थायी समाचार किया जाये ताकि संरक्षित बाढ़ एवं उसके नुकसान से बचा जा सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि इसमें एवेंस इंस प्रकार के होने चाहिए कि अधिकारी आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि निर्दिया के लकड़ाम से सम्बन्धित प्रस्ताव भी प्रस्तावित की जाये। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में बचा आउट हुई सड़कों के लिए भी स्थायी समाचार देने परामर्श दिया करने के निर्देश दिये ताकि पर्यावरण में मार्ग बाधित न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आंकलन प्राप्त किया जाये तथा जिस लेणी कर कार्य है, उसे उसी लेणी में

प्रस्तावित किया जाये तथा डेटा देने में विशेष सम्बन्धित वर्ती जाये। उन्होंने कार्यान्वयन में तहत भी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने सीवर, डैनेज तथा एसटीपी विभाग से सम्बन्धित कार्यों हेतु भी कार्य योजना के बारे महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारीयों को दिये। बैठक में पोस्ट डिजिस्टर नोइस असेसमेंट (चक्कट) टीम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राप्तिकरण से हरिहर जनपद में हुए भूरी बारिह-पूर्वसून के कारण हुए जनरान, पूर्वानुपीय एवं शतिग्रस्त भवनों का विवरण लिया साथ मानसून सत्र 2025 में हुए क्षति का विभागवार विवरण को जानकारी ली गई।

उन्होंने विद्युत, पिट्कुल, सिंचाई, लोनिंग, विद्युत, विकिस्ता, बाल विकास, सिंचाई सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारीयों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने पीडीएम से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। भीमगंडा युल के पास चार-चार रेलवे ट्रॉक पर रहे मलबा स्थल तथा मरम्मा देवी क्षेत्र में भू-स्खलन सम्भावित होत्रों का भी स्थलीय निरीकण किया गया। उन्होंने निरोग्य के पीरान डूम समस्याओं के स्थलीय समापन हेतु महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

इस दौरान अपर वित्तानिकारी ट्रिप्पेंड निर्देश देने, एवडीएम प्रोफेसर डा. त्रिपानदीप, असिप्रोफेसर एवं पीयूनिवरिटी डा. एम. चंपा, रेस्ट नोडल अफसर डा. मोहित कुमार दुनिया, एचडीएडी. सर्विचं परांगों द्वितीय, उप वित्तानिकारी निरोड़ कूपर, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी भोया राजव, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी घण्टा, जिला पर्यावरण अधिकारी सुशील नीतियाल, सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

Published in: Rashtriye Sahara Newspaper

**my city** **आमरउजाला**

सुब 6:11  
सूर्योदय  
राम 6:08  
स्थानीय समाचारमुद्देश

देहरादून | सोमवार | 26.09.2025  
आर्यन शुक्ल-सपनी विद्युत  
amarujala.co

# बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए स्थायी समाधान

**सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश**

**मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण**

**संचाद न्यूज एजेंसी**

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसों समन्वय से एक प्रभावी कार्यक्रमों वाले बनाकर केंद्र सरकार को भेजे ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करें।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंसिस्टर डॉ. अवल चौरसिया ने रविवार को गार्डीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूखलन संभावित क्षेत्रों का दीरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष

भूखलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भौमगोड़ा पूल के पास जात-जात रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और यनसूत देवी बैंग में भूखलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

कुमार रिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉर्ट प्रोजेक्टेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

इस मोकेपर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेहो, प्रो. डा. गणेशीय, असि.प्रो.क्सर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पूर्णिया, उप जिलाधिकारी जिरोड्र कुमार, जिला विकास अधिकारी बद्रप्रकाश, आपदा सुशील नैटियाल आदि मौजूद रहे।

प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी घ्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सर्करेना, रेंजर वृजेन्द्र दत्त, जिला पर्वटन अधिकारी सुशील नैटियाल आदि मौजूद रहे।



## CSIR-CBRI in the Limelight | 26.09.2025

**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
**हर खबर पर पैनी नज़र**

बैंगलौर राज्य देक्षोत्तमी द्रेपल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

उपलब्ध  
राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता

By: **Sahara Live News**  
0 SEP 26, 2025



इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुडकी तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुडकी के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न रस्तों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी औंस सार्विकिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुँचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान ख्यालों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अश्वि सुरक्षा अभियानिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी यार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उहे भूकंप अभियानिकी, अश्वि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ. हेमता, श्री नदीम, डॉ. नीरज एवं और भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपरिणिति म हुआ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिकात तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अस्तिरोधक धरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उहे कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन विज्ञान, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

Presented in: <https://www.saharalivenews.com/archives/9838>



Published in: Hindustan newspaper

## उत्तराखण्ड-हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

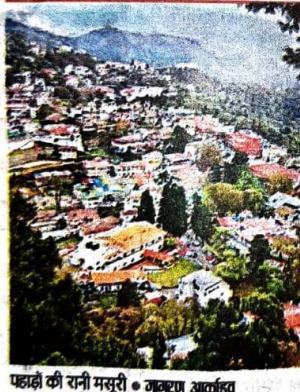
### जागरण विशेष

दैनिक जागरण • ज्ञानपत्र

**खबरी:** उत्तराखण्ड के कानप्रपात, नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, दौलहाल, सिविल में एक जिल्हे से अधिक इमारतें संरचनात्मक अविभागिक (स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिंग) के मरम्मतों पर छारी नहीं हैं। इनको जौखिम परिस्थितियों के अनुसर्य दिज़ाइन नहीं किया गया है। इस कारण वे इमारतें उच्च जौखिम वाली भैंसी में हैं, जिनके अविभागिय घटनाक्रमों के दैरेन ढाने वा भारी क्षति की आंशिक रहती हैं। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चाल रहे हैं। ये बहुत केंद्रीय इमारतें अनुसंधान संस्थान (सीरीज़आरआई) के अध्ययन में सम्मने आहे हैं। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय आयुर्वेद प्रबोधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीरीज़आरआई इमारों के संरचना अविभागिकों प्रधान के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर

- उच्च जौखिम वाले इन इमारों के भूकंप के दैरेन ढाने वा भारी क्षति की आंशिक
- केंद्रीय इमारत अनुसंधान संस्थान राज्यों के अध्ययन में सम्मने आई है यह बात



फालों की रानी मसूरी • ज्ञानपत्र आर्थार्ड

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट



सीरीज़आरआई के मुख्य विज्ञानी डॉ. अजय चौरसिया • ज्ञानपत्र

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रुक्ना जौखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डॉ. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर

भूकंपीय क्षेत्र वार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू-गति के

प्रति संबंधित इलाज हैं। ये खड़ी दरानों, अनियंत्रित विकास और संरचनात्मक

अविभागिकों की अनदेखी के कारण

अधिक जौखिम प्रेरित हैं। इन छह शहरों में

4,978 इमारतें विहित की गई हैं, जिनमें

आपालित विनाई (पुरावरण) है। बहुत तत्काल पुनर्निर्माण की

आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।

### रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रमाणित शहरों में प्रायोगिकता के बाहर पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कर्यालय हो।
- आपालित विनाई और प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल।
- वास्तविक समय भूकंपीय नियराती ज्ञानियों।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष ज्ञान से सहभागिता और संस्थापन इमारतों के रेट्रोफिटिंग को मिले प्रायोगिकता, ताकि वह जौखिम कम हो।
- सभी नए नियमणों के लिए अनियार्थ इमारतों के अनुयाल को लागू करना और पक्का करना।
- मार घालिया नियरेंजन और जौनिया विनायों में जौखिम संवेदनशीलता वालीनों को लाइफ्सैफ करना, ताकि जल्दी कठिन उत्तर जा सके।
- आपाला प्रतिरोधी कंटों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, कमता और संरचनात्मक भूजलूपी जर्सरी।
- लांचों नियामण प्रवाली और आपाल तेपारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

व्यापक पहुंच विकासित की गई है।  
संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

Published in: Dainik Jagran newspaper

**CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.**



### राष्ट्रीय सहारा

### हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुआ हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में सोमवार से हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हो गया। 6 अक्टूबर तक पखवाड़े का आयोजन होगा। संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हीषी कानूनी ने किया। इस अवसर पर हिन्दी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राव बच्चन की पुस्तक 'म्बुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीपि कर्मकर ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समाप्ति पर 6 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण होगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पीसी थप्लियाल, डा. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. नवल किशोर बजारा, अवनोन कुमार, हुमेश अलहर, वर्षण महेश्वरी, दिनेश, अमित, भारती आदि उपस्थित रहे।

Published in: Rashtriye sahara newspaper



Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.

# CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025



Mon. Sep 15th, 2025 10:53 AM

सहारा लाइव  
NEWS

हार खबर पर पेनी नजर

अंतर्राष्ट्रीय राज्य टेक्नोलॉजी देवल राष्ट्रीय लोकतंत्र स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

खेल हमारे जीवन का हिस्सा, निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar,

By Sahara Live News © SEP 14, 2025

SAHARA LIVE NEWS

बारिश से उत्तराखण्ड की ...



सोनाराई-आर-सेंट्रल विलिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीवीआरआई), रुद्रांगी में संचयन परिवार के बीच कबड्डी लीग का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीवीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया।

टीम-A  
हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, शुभ कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अजीम, रवीना, ए. अरविंद, शुभम, रवीना

टीम-B  
विनेश, मनीष, मोहित, दिमांकु, हरजीत, अमित यादव, सोभर कुमार राय, एन के. बंजारा, विष्णु, विजेंद्र

गेंद का संचालन रेण्टरी मेहर विंग द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतियोगिता ने केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीवीआरआई परिवार ने उत्तराखण्ड के द्वारा खेल का आनंद लिया और बिलाडियों का उत्साहवर्णन किया।

इस कार्यक्रम में श्री अनन्त श्री अनंत, श्री Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे।

शोनू, शर्मा + शुभम बेट डिकेंडर, बेट कैबर मोहित-मनीष कुमार, टीम A काफिन श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री विनेश विजेता रही। निदेशक महोदय के उद्घोषण में भारत के पारंपरिक खेलों से मुकाबले को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के बाप टीम भाला से आगे बढ़ने के बाप आ़दावित रहने के लिए बंदेश दिए।

सोनू, शर्मा एवं शुभम को बेट डिकेंडर, और बेट कैबर मोहित-मनीष कुमार, रहे।

इन टीमों का नेतृत्व दिमांक ने किया। निदेशक महोदय के उद्घोषण में भारत के पारंपरिक खेलों से मुकाबले को जोड़ने और स्वास्थ्य व्यायाम के बाप टीम भाला से आगे बढ़ने के बाप आ़दावित रहने के लिए संदेश दिए।

इंफर चंद्र संवाददाता सहारा टीमी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9761>

CSIR-CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 01.09.2025



Published in: Rashtriye sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

## **CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025**

**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
**हर खबर पर पैनी नजर**

□ अंतर्राष्ट्रीय राज्य □ टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य **LIVE TV** **CONTACT**

**जनरलंड**

# खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक **CBRI**

 **By** [Sahara Live News](#) **□ AUG 31, 2025**





राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के बीर सपूत्र एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिशो ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरांत, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण गतावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के बीर सपूत्र मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।

ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9715>

**CSIR-CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29–31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.**

**CSIR-CBRI in the Limelight | 30.08.2025**

## Presented in Newspaper: Dainik Haka

## Presented in Newspaper: Hindustan

## CSIR-CBRI in the Limelight | 29.08.2025



**Uk Bharat**  
सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun, Haridwar, Roorkee, Uncategorized

### सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

© Uk Bharat | © August 29, 2025



सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक रफ खुलने वाला धातु का संभिक्षित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा ओडियोगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तपस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का ओपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लप्तों, धूएं और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शारीरिक मौल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और अप्रैल 2025 में 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सोरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना ट्राफ मौजूद रहा।

Published in :- <https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/>

CSIR-CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

**सहारा लाइव**  
**NEWS**  
**हर खबर पर पैनी नज़र**

Home अंतरराष्ट्रीय राज्य ▾ टेक्नोलॉजी ट्रेवल राष्ट्रीय लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य LIVE TV CONTACT

### उत्तराखण्ड

## शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता

By Sahara Live News  
© AUG 21, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्विप्रोद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की थित सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण द्वेरा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रोद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रोद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुई हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रोद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रोद्योगिकियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंब्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपन की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंगीच प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रोद्योगिकी के कारण कलोराइड प्रवेश और सलफेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्विप्रोद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामंडी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9680>

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.



## TOI DEADLY CLOUDBURST HITS KISHTWAR'S CHISHOTI VILLAGE CAUSING FLASH FLOODS

Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarkashi's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? [Go Ad Free Now](#)

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glacial lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- [https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp\\_articleshow/123349265.cms](https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms)

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.

# CSIR-CBRI in the Limelight | 08.08.2025



Presented in Newspaper: Dainik Jagran



Presented in Newspaper: Jagran

**जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन**

टीना डिटियाल - जागरण

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, मूकेप, भूखंडन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झाल, बालंड फटना आदि को द्वाट से संबंधित है। बत्तीक, वह नदी से कमज़ोर पहरत है। वहीं, उत्तराखण्ड, हिमालय प्रदेश जैसे वाहानी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमसा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बोद जरूरी है। इससे जल्द ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को कम किया जा सकता है। बढ़ कहाने हैं कैंपिंग भवन अनुसंधान संस्थान (सीलीआरआइ) रुड़की के संरचना अधिकारीकी प्रधान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिरेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण भूखंडपूर्ण होता है, जैसीकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। इसे में बाकी पांच कंपोनेट पर विशेष

राहत की पहले से हो तैयारी विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत ये बहव कार्य में काफी दिक्षित आती है। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुझित स्थानों पर रक्फ़, अस्तुताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तकाल राहत पहुंचाई जा सकता है।

व्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशीवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के

• आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तेजी से और बाद में प्रतिक्रिया पुनर्वास और कुनैनियां महत्वपूर्ण।

• पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनका सख्ती से पालन करने की जरूरत

उत्तराखण्ड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान दा, चौरसिया के अनुसार हिमालय में 2023 की आपदा के कारण यह के पर्टन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखण्ड को 2013 की आपदा के बाद से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ। आपदा का प्राप्त लेख समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

50 पीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नियमों के आसपास नियमण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधरसाव की बजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज़ मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। इनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

50 पीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नियमों के आसपास नियमण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधरसाव की बजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज़ मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। इनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

Presented in Newspaper: Jagran

**Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.**

## विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के समावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची। टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मौके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्व करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखण्ड भूखंडन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निवेशक शान्तुन सकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेतान के निवेशक रवि नेगी, बाड़िया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखण्ड भूस्थलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान संस्थान कर्मचार शाम्भल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में कैल मलबे के नमनों को भी परखा। खीरागांग के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायज लिया।

स्थलीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बुधस्पतिवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को लालाने का काम कराया। जात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। व्यूरा

Published in Public News Newspaper

# CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

## Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

### • The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorkee -CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947-2025)" by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.



Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

## Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

### • The Times Of Suncity (Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorkee

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947-2025)" by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled "*Low-Cost Construction Technologies (1947-2025)*" by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

# CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखण्ड

## Skill Initiative Program.

By Sahara Live News

⌚ JUL 28, 2025



### Inauguration of Five-Day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 28, 2025:

A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9548>



Published in Hindustan Newspaper



Published in Dainik Jagran

**CSIR-CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.**

## Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi

letters@hindustantimes.com

**NEW DELHI:** Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by

Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Disaster

Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far. →P8

Published in Hindustan Times Newspaper

## Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

**New Delhi:** In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a



Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Published in Times New Network Newspaper

## हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम गृह मंत्री शाह का निर्देश-पता लगाएं, कर्यों बढ़ीं आपदाएं

अमर उमाला व्यू



अंतर्राष्ट्रीय दल ले रहा हालात का जायजा, हिमाचल प्रदेश के लिए नियन्त्रण में दोषीय-प्रतिवाद मास्टर 2025 के दोषीय वाल, अद्यतक अंदर वाल और भूखलन के मध्यस्थिति के दोषीय वाल विना ही दूसरात के प्रबल अवालन के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज दिया है। यह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों को दौड़ा करेगा।

अन्य राज्यों की भी लालाम की जा रही है ममद-हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य अपार्टमेंट लिये से 18.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिम्मेदारी की जल्दी किस भी दे चुके हैं। केंद्र ने हिमाचल सरकार सभी राज्यों को अद्यतक राज्यों आपदा मोर्चन वाल (एडीजीएफ) टीमें, सेना और और वायर सेना को राज्यों की सहायता करार की सदूच साधारण भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और युवानों के हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिव्यय को पहले ही मंग्यों दे चुके हैं। 7 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये की पहली किसी भी जारी करने दी गई थी।

Published in Amar Ujaala  
Newspaper

**Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.**

**CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025**

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का भव्य समापन — युवाओं को मिली ऊर्जा दक्ष और सतत भवन निर्माण तकनीकों की गहन जानकारी

© bahadrababadnews 📅 July 19, 2025 ⏰ 11:21 am



(शहजाद अली हरिदार) रुद्धी, 18 जुलाई 2025: सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीआईआरआई), रुद्धी द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम “भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियाँ” का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हआ।





ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- <https://bahadrbabadnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/>

## **CSIR-CBRI in the Limelight | 16.07.2025**

उत्तराखण्ड

# **“Latest Trends in Building Construction**

By **Sahara Live News**

⌚ JUL 16, 2025



### Three-Day Training Program on “Latest Trends in Building Construction Technologies” Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on “Latest Trends in Building Construction Technologies” commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, “Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today’s youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges.” He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI’s state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

**Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9509>**

**CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on “Latest Trends in Building Construction Technologies” from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.**

**CSIR-CBRI in the Limelight | 03.07.2025**



आरिफ नियाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल विलिंग रिसर्च इंटीलूट् (सीबीआरआई), रुक्की ने धर्मशाला में अयोग्यता डेसिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव राहडाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉर्ट एक दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक सी सुरीव शर्मा ने भी स्टाट का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्थान में कई वितरक्ष्य प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मौंडत, ऊर्जा की बहत करने वाले इन भूटे मिट्टी बनाने वाली इन बनाने की मार्गीने, सोर्टर water heater for high altitude region और बहत कुछ शमित थे। 1000 से अधिक स्फूर्ती उत्तरों ने इस बढ़त का दीरा किया और इन नवाचारों का देखने और जानने के लिए उत्तमाहित थे।

इसके अताथा, सीएस-आर-सीबीआरआई स्थान ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को अकार्यकृत किया हो। टिकाऊ और तरीके निर्माण समाचारों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिवृद्धि को दर्शाता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33804>

# डेस्टिनेशन हिमाचल 2025

By **Sahara Live News**

🕒 JUL 3, 2025



सीएसआईआर-सेंटरल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुडकी ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईंट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईंट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीते निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9454>

From 2<sup>nd</sup>-4<sup>th</sup> July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

# CSIR-CBRI in the Limelight | 28.06.2025

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्वास स्वास्थ्य राजनीति लोकतंत्रज्ञ स्वास्थ्य राज्य शिक्षा एकस्वरूप वांतीवृत्ति

UNCATEGORIZED

## सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुडकी में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव पहुंची रुडकी, हुआ स्वागत



सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुडकी में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) पं. Kalaiselvi तथा पृष्ठी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एवं विविद्वन संस्थान के दोनों पर पहुंच।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के साथ वीरेश वेजानिक एस. के. नेती, डॉ. जयवी वीरसिंह, डॉ. डी. पी. कनूगो, डॉ. पी. सी. धर्मलिंगाल, एस. के. शिंह, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, आशीष चित्पल, डॉ. हेमतला, डॉ. हीना गुरुा, ashwathi और डॉ. लीना वीरसिंह उपस्थित हों। आगामी विशेष अतिथियों ने संस्थान की अनुगमनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया, विस्में विवरण दीर्घी (Virasat Dirghai), राष्ट्रीय धूकृष्ण अभियान परीक्षण सुविधा (NEET), डीकृष्ण पर्स युवा सुविधा, लिंगिकेवन प्रयोगशाला, उडी निर्देश लेब, अंडी अभियान परीक्षण सुविधा एवं औंगल वेल फायबर मिलिरेजन सुविधा प्रमाण रहीं।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. अर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिन में CSIR"।

डॉ. कलाईसेल्वी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारी की साराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकरक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske upper उपर्योग योग्य solar water heater और तापीय प्रणाली, अगि तुम्हा अभियानिकों, उडी निर्देश तकनीक, और HARI Project के जोड़ता लैह-लाइव जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आतंसीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वेजानिकों का उद्देश्य होना ।

पृष्ठी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एस. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की साराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आपदा-रोपी भवन डिजाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रसारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुरक्षित और आपदा-भ्रमावृत्ति सापन के साथ हुआ।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33794>

प्रतिवार्षिक

## हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR”।

By Sahara Live News

© JUN 28, 2025



सीएसआईआर-सीवीआरआई, रुरोकी में डीनी, सीएसआईआर और सचिव, टीएसआईआर, भारत सरकार एवं सचिव, पुणी विज्ञन मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन  
सुनायी, 28/06/2025

सीएसआईआर - सेटू वित्तिका रियर्स इंस्टीट्यूट (सीवीआरआई), रुरोकी में आवासीय विकास की महानिदेशक एवं टीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (डॉम्स्टी) एन. कलाईसेली तथा पुणी विज्ञन  
मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एस. रीवानग संस्थान के द्वारा पर मुहूर्मो

इस अवसर पर सीवीआईआई निदेशक डॉ. अर. प्रदीप कुमार के द्वारा वीडियो कॉनेक्ट एवं कॉन्फ्रेंस डॉ. डॉ. कलाईसेली डॉ. डॉ. कुमार, डॉ. डॉ. श्वेतायुग, एवं कॉन्फ्रेंस के लिए डॉ. डॉ. चंदन चक्रवर्य  
मोणा, अधीक्षित प्रभावी डॉ. डॉ. मेत्ता, डॉ. डॉ. शीता गुप्ता, ashwathi और डॉ. डॉ. लीला लोरेटोपा उपस्थित रहे। आगंतुक विशेष अधिकारी ने संस्थान की असाधुमुक्त अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का  
प्रमाण दिया, जिसमें विस्तृत दीर्घ (Vasas Disha), राष्ट्रीय मुक्त अधिकारी परीक्षण सुविधा (NEET), डीबिस पर्सोन सुविधा, लिंकेंगेनियरिंग प्रयोगशाला, उत्तीर्ण विटेंग तेक, अधि-अधिकारी परीक्षण सुविधा एवं  
अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों की सुविधा रही।

प्रमाण के पात्र आगंतुक कार्यक्रम की मुख्यता निदेशक डॉ. अर. प्रदीप कुमार के साथ भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को सद्वा करते हुए प्रेस्क नारा प्रस्तुत  
किया। “हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR”।

डॉ. कलाईसेली ने अपने संस्थान में सीवीआईआई की उत्कृष्टी कार्यालयों, सामूहिक कार्यसंकाली और नवाचारों की सहायता करते हुए विशेष रूप से जलवायु प्रतिक्रियक भवनों, 12000 फॉट की ऊँचाई की  
अवासीय संस्थानों की सहायता की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होने चाहिए, “To touch the untouched, to reach the unreached”।

पुणी विज्ञन मंत्रालय के सचिव डॉ. एस. रीवानग ने संस्थान के ऊर्जा समाचार और नवाचारों के विकास की सहायता करते हुए कहा कि सीवीआईआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक  
महत्वपूर्ण भागीदार नहीं रहा। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और अपनी रोडमैप प्रयोजनों में सीवीआईआई की भुमिका को रेखांकित किया

और संस्थान द्वारा विकास तकनीकों को देखा जाने के लिए उनका लक्ष्य तुरुतरी और अनुदाप्राप्ति योग्यता का लक्ष्य रखा।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9416>

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

## **CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025**

### **सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन**



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सके, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूरो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ. कानूरो, डॉ. ताविश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ. नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. ताविश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुमत वाचा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- <https://www.janmudde.com/archives/33769>

**CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.**

## **CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025**

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”

By Sahara Live News  
© JUN 23, 2025



सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्ट के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9387>

**CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.**

## CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखण्ड

# प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर

By Sahara Live News

© JUN 6, 2025



सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतारने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैशानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेमासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9345>

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

### पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी



रुडकी सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे श्री नरेंद्र पंत, डीएसपी रुडकी और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि अने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी ज़िम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह अने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- <https://www.saharalivenews.com/archives/9334>

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

**CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025**



“सरकार समका दाविद” शीमा के तहत भारत सरकार की पहल सबस्ता वापसी 2025 तक रहे उत्तर के हिसे के रूप में, सीएसआईआर-केट्रीय भवन अनुशंसा संस्थान (सीएसआईआर-सीसीआरआई), रुक्के ने अपने दो सालाह के सबस्ता अधिकारी (15-15 मई, 2025) का समाप्त 15 मई, 2025 को अपनाया अंतिमीयमांस में अपनाया। एस समाप्त सामारों के बारे किया। कामकाज का समाप्त 15 मई, 2025 तक नीरज जेने को किया। तां. तीना बोरसिनी जन्म समाप्ति तभी का सहात किया और परवाने के दोस्रे अंतिमीयमांस का विस्तृत अंतर्वर्तन प्रस्तुत किया, जिसमें त्रिभुवन अधिकारी, सीएसआईआर-सीसीआरआई सभी को अप्रोतोको, सीएसआईआर-सीसीआरआई कार्यालयों और बाहर विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बाबों के विविकान्त प्रतिवेशिता, जिल्हों के उत्कर्षों की सफाई और पूरे संसाधन में व्यापक साहाई अधिकार आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीसीआरआई के निदेशक प्रौ. अर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधीत किया और सभी सम-वयक्ति, प्रतिभावितों और सहस्रों कर्मचारियों के सामूहिक प्रश्नों की समाप्ता की। उन्होंने सहत दिक्षास के महल पर जोर दिया, युवाओं को अधिक प्रबल करने के लिए अपनी समाप्त संसाधनों के लिए प्रतिक्रिया किया और बाहरी साहसी के बाध-साध मानसिक शायदी बनाए रखने की अवधारणा पर प्रसार दिया। उन्होंने कहा, “वस्त्रावधान पूरा के बाद दूसरा सन्तर पर है।”

तां. नीरज जेन ने विवक्त करने के अंतर्वर्तन तभी उत्तर और प्रतिवेदी के साथ प्रतिवेशितों के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रस्ता और प्राप्ती के रूप में, प्रौ. अर. प्रदीप कुमार ने संसाधन और विविकान्त प्रतिवेशितों के विजेताओं को प्रस्तुत विवरित किया।

वन्यजीवों और प्रतिनिधियों को प्राप्ति की और संरक्षकार्य की समर्थन की। एक विशेष समान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेहीं, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संरक्षन के सफाई कार्यक्रमियों को संक्षेप बनाए रखने के उनके नियन्त्रण प्राप्ति के लिए प्रयत्नों का प्रतीक कर दिया। समाचारों का समाप्त हुआ, और मैती द्वारा दिए एवं हाथिक व्यवहार ज्ञान के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने नियन्त्रक महोदय, बात विद्या महिर के शिक्षकों और तारा, आपको दीम और सीसीआर-सीसीआर-एल और सरकारा पक्षवादी 2025 के सकृद आपोक्तन देने वाले सभी लोगों के प्रति आपने वक्त दिया।

Published in Sahara news :- <https://www.janmudde.com/archives/33392>

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness. The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

## CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

### सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read



आरिफ नियाजी।

रुडकी सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

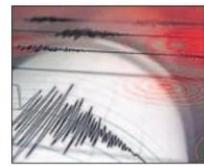
Published in Jan Mudde E-newspaper

### आधुनिकउपकरणोंकाप्रयोग जरूरी

#### चर्चा

रुडकी, कार्यालय संचादाता। 2015 में नेपाल में एएचिनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

खंडहर से लेयोलान नामक शोधप्रयोग पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को समोनेवाले करना है। विशेषज्ञों ने कमज़ोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूखलन और चाह के जीवितों ने नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खंडों जैसिए



क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बताया। उन्होंने भारतीय मानकों (आई-एस-कोड) की नियमित रूप से अपेक्षा करने और ऐर-संरचनात्मक तरीयों जैसे कि इनफिल दीवारों और फिल्म्सर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीएसएस, डीएन और ल्यूरिट ऑफिसल नैसर्जिक उपकरणों के उपयोग को भवित्व की तैयारियों के लिए आवश्यक जान दिया।

कार्यक्रम का साप्तरण सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आरोग्य प्रणाल, मिक्की दलवेहरा, डॉ. चन्द्रन स्वरूप मीठा, आरोग्य कार्प, समीर यादव, अमित कुमा, ग्रो. सीबीआरमूर्ति, ग्रो. डी श्रीनारेश, ग्रो. योगेन्द्र सिंह, अनुप कुमार, ग्रो. रूपेन सिंह, डॉ. हरि कुमार, ग्रो. रूपेन गोखला आदि शामिल रहे।

Published in Hindustan Times

### खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स  
रुडकी (आरिफ नियाजी) रुडकी सीएसआईआर-सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर-कैंट्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुडकी ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लीलापनरु

के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक" शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर

दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तिचित्र फ़िल्म, "खंडहर से लीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के नियांग के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के पुनर्निर्माण सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति शीर्ष पृष्ठ 2 पर.....

Published in Golden Times E-newspaper

❖ E-News Clips:-

उत्तराखण्ड

## समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

By Sahara Live News  
© MAY 13, 2025



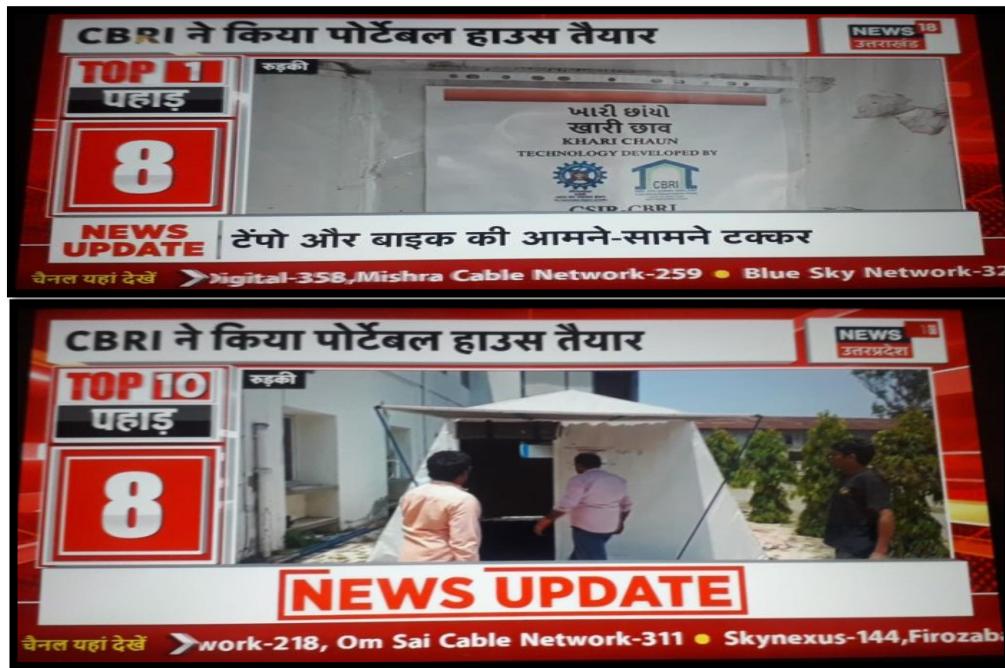
सीएसआईआर - केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की  
CSIR - Central Building Research Institute, Roorkee  
National Technology Day  
13 May, 2025



सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तातरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव  
रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- <https://www.saharalivenews.com/archives/9252>

❖ Television News :-



Telecasted in News Uttar Pradesh Channel



Telecasted in Nai Aawaz Channel

Media Clips of a Technical Panel-discussion on “Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake” held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

## ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम: पंत

### कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रौ. कैवे पांडे ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक ब्राह्मणकारी कदम है। जो पारंपरिक द्वाजल-चालित यात्री-वाहनों के लिए एक हाते विकल्प उदाहरण है। यह यात्रा उड़ाने वाले यात्री सीधी आरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और इंटिलर अनुसरण करवायेगा।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि धेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय पर्यावरण के कामर पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन

सिवता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का बाबा करता है।

आरप्रौद्योगिक कूमार ने कहा कि तिमाहीयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काठमिल आप सार्वजनिक एंड इंट्रोट्रैक्टर रिसर्च-सेंटर मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीआईआरआई) दुमापुर ने सीधी आरआई रुड़की के सहयोग से आपने आईआईटी-ट्रैक्टर और इंटिलर के लिए एक हाते विकल्प तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जो किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इकाई में बहुत प्रति पायदर्दि दिया। उन्होंने कृषि पहाड़ियों के बारे में जानकारी दी।

सीधी आरआई के डायेक्टर ने

- सीधीआरआईई-ट्रैक्टर और इंटिलर का विद्युत यात्रा अनुवरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि वह पहले भारत के स्वच्छ क्षेत्रों में सतत कृषि के लिए एक कृषि प्रौद्योगिक कूमार ने कहा कि तिमाहीयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काठमिल आप सार्वजनिक एंड इंट्रोट्रैक्टर रिसर्च-सेंटर मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीआईआरआई) दुमापुर ने सीधी आरआई रुड़की के सहयोग से आपने आपने कृषि पहाड़ियों का प्रदर्शन किया है। जो किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इकाई में बहुत प्रति पायदर्दि दिया। उन्होंने कृषि पहाड़ियों के बारे में जानकारी दी।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का संबोध आरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्होंने कृषि पहाड़ियों के बारे में जानकारी दी।

सीएसआईआर-सीआईआई के निदेशक डॉ. नेश चंद्र मुमू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि यात्रा नामी कैवल दृष्टिकोण के लिए नहीं, वर्तमान की यह है। हम यह क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का समाना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिवद है।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मूल्य अतिविधि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रौ. कैवे पांडे, विशेषज्ञ, एवं संसाधन विभाग के लिए डिजिट की यह है। हम यह क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का समाना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिवद हैं।



रुड़की में सीधीआरआई बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी।



रुड़की में सीधीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। ● हिन्दुस्तान

## ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम: पंत

### कृषि प्रौद्योगिकी

सिवता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का बाबा करता है।

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रौ. आरप्रौद्योगिक कूमार ने कहा कि तिमाहीयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक क्रांतिकारी कार्यक्रम के तहत काठमिल आप सार्वजनिक एंड इंट्रोट्रैक्टर रिसर्च-सेंटर मैकेनिकल ऐतिहासिक कार्यक्रम के लिए एक हाते विकल्प प्रदर्शन करता है। यह यात्रा उन्होंने वुडवार को सीधी आरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और इंटिलर अनुसरण करते हुए इकाई में बहुत प्रति पायदर्दि दिया। उन्होंने कहा कि भारत का कृषि धेत्र,

- सीधीआरआईई-ट्रैक्टर और इंटिलर का विद्युत यात्रा अनुवरण
- किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती

कहा कि वह पहले भारत के स्वच्छ क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण मौत का प्रदर्शन किया है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से आपने आईआईटी-ट्रैक्टर और इंटिलर के लिए एक हाते विकल्प प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इकाई के बारे में जानकारी दी।

सीधी आरआई के डायेक्टर ने

सीएसआईआर-सीआईआई के निदेशक डॉ. नेश चंद्र मुमू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि यात्रा नामी कैवल दृष्टिकोण के लिए नहीं, वर्तमान की यह है। हम यह क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का समाना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिवद हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मूल्य अतिविधि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रौ. कैवे पांडे, विशेषज्ञ, एवं संसाधन विभाग के लिए डिजिट की यह है। हम यह क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का समाना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिवद हैं।

Presented in Hindustan Times

- Television clips :-



Television telecast on News 18 Uttar Pradesh



Figure 1



Published in Dainik Jagran Newspaper